CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING
15 A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110 075
Phone : 91-11-25309300
Fax : 91-11-25088637, email : dir.ccrt@nic.in
website : www.ccrtindia.gov.in

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
1

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
1

भारत के संगीत वाद्य

भारत विश्व में, सबसे ज्यादा प्राचीन और विकसित संगीत तंत्रों में से एक ही उत्तराधिकारी है। हमें इस परम्परा की निरंतरता का ज्ञान संगीत के ग्रंथों और प्राचीन काल से लेकर आज तक की मूर्तिकला और चित्रकला में सगीत वाद्यों के अनेक दृष्टांत उदाहरणों से मिलता है।

हमें संगीत-सम्बंधी गतिविधि का प्राचीनतम प्रमाण मध्य प्रदेश के अनेक भागों और भीमबेटका की गुफाओं में बने भित्तिचित्रों से प्राप्त होता है, जहां लगभग 10,000 वर्ष पूर्व मानव निवास करता था। इसके काफी समय बाद, हड़प्पा सभ्यता की खुदाई से भी नृत्य तथा संगीत गतिविधियों के प्रमाण मिले हैं।

संगीत वाद्य, संगीत का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनका अध्ययन संगीत के उद्‌भव की जानकारी देने में सहायक होता है और वाद्य जिस जनसमूह से सम्बंधित होते हैं, उसकी संस्कृति के कई पहलुओं का भी वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए गज बनाने के लिए बाल, ढोल बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली लकड़ी या चिकनी मिट्टी या फिर वाद्यों में प्रयुक्त की जाने वाली जानवरों की खाल-यह सभी हमें उसे प्रदेश विशेष की वनस्पति तथा पशु-वर्ग के विषय में बताते हैं।

दूसरी से छठी शताब्दी ईसवी सन् के संगम साहित्य में वाद्य के लिए तमिल शब्द ''कारूवी'' का प्रयोग मिलता है। इसका शब्दिक अर्थ औजार है, जिसे संगीत में वाद्य के अर्थ में लिया गया है।

बहुत प्राचीन वाद्य मनुष्य के शरीर के विस्तार के रूप में देखे जा सकते हैं और यहां तक कि हमें आज छड़ी और लोलक मिलते हैं। सूखे फल के बीजों के झुनझुने, औराँव के कनियानी ढांडा या सूखे सरस फल या कमर पर बंधी हुई सीपियों को ध्वनि उत्पन्न करने के लिए आज भी प्रयोग में लाया जाता है।

हाथ का हस्तवीणा के रूप में उल्लेख किया गया है, जहां हाथों व उंगलियों को वैदिक गान की स्वरलिपि पद्धति को प्रदर्शित करने तथा ध्वनि का मुद्रा-हस्तमुद्रा के साथ समन्वय करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

200 ईसा पूर्व से 200 ईसवीं सन् के समय में भरतमुनि द्वारा संकलित नाट्यशास्त्र में संगीत वाद्यों को ध्वनि की उत्पत्ति के आधार पर चार मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है :

1. तत् वाद्य अथवा तार वाद्य – तार वाद्य
2. सुषिर वाद्य अथवा वायु वाद्य – हवा के वाद्य
3. अनवद्ध वाद्य और चमड़े के वाद्य – ताल वाद्य
4. घन बाद्य या आघात वाद्य – ठोस वाद्य, जिन्हें समस्वर स्तर में करने की आवश्यकता नहीं होती।

इस संग्रह में हम कुछ तारदार वाद्य देखेंगे। भारत में इस तरह के वाद्यों की एक विस्तृत विविधता है और विविध वर्गों के प्रस्तुतीकरण के लिए केवल कुछ ही वाद्य चुने गए हैं।

- भारत की संगीत परम्परा की निरन्तरता का प्रमाण देना,
- जहां तक सम्भव हो सके, मूर्तिकला और चित्रकला में संगीत वाद्यों के चित्रण द्वारा संगीत के उद्‌भव की जानकारी देना,
- शहर के कला-रूपों और गांवों के अंतर्संबंध का अध्ययन करना,
- संगीत वाद्यों की बनावट और उपयुक्त सामग्री पर आधारित ध्वनि-रचना के सिद्धांतों को समझना,
- रचनात्मक अभिव्यक्तियों के विभिन्न विषयों की आत्मनिर्भरता को स्थापित करना,
- संगीत के अध्ययन का निम्न के साथ संबंध :
- भूगोल – वनस्पति और प्राणि-समूह

MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA

India is the inheritor of one of the most ancient and evolved music systems in the world. The continuity of the musical traditions of India is established through a study of musical texts and numerous visual references one finds of musical instruments in painting and sculpture from prehistoric times to the present day.

The earliest evidence of music activity is found on the walls of cave paintings at Bhimbetka and in several parts of Madhya Pradesh, which were occupied by man approximately 10,000 years ago. Much later, in the excavations of the Harappan Civilization also, evidence is available of dance and music activity.

Musical instruments are the tangible and material representation of music which is an auditory art. A study of these helps in tracing the evolution of music and also explains many aspects of the material culture of the group of people to which these instruments belong. For instance, the hair used for making the bow, the wood or clay used for making the drum, or the hide of animals used in the instruments, all these tell us about the flora and fauna of a particular region.

The Tamil word for instrument—*Karuvi* is found in Sangam literature of the 2nd to 6th century C.E., the literal meaning of which is 'tool'. This is extended to mean instrument in the context of music.

Very ancient instruments may be seen as an extension of the human body and we find even today, sticks and clappers. Dried fruit rattles, the *Kaniyani Danda* of Oraons or the dried berries or shells tied to the waist are used for producing rhythm, even today.

The hand was referred to as the *Hasta Veena*, where the hands and fingers are used to show the notation system of vedic chanting, coordinating sound with *mudra*—hand gesture.

In the Natya Shastra, compiled by Bharat Muni dated 200 B.C.E.-200 C.E., musical instruments have been divided into four main categories on the basis of how sound is produced.

(i) The Tata Vadya or Chordophones – Stringed instruments

(ii) The Sushira Vadya or Aerophones – Wind instruments

(iii) The Avanaddha Vadya or Membranophones – Percussion instruments

(iv) The Ghana Vadya or Idiophones – Solid instruments which do not require tuning.

In this package we shall see a few stringed instruments. India has a large variety of such instruments and only a few have been selected keeping in mind representation of the various categories.

The aim of producing the package is:

– to establish the continuity of musical traditions of India;

इतिहास - इतिहास के विभिन्न कालों में संगीत वाद्यों के प्रकार तथा संगीत की विविध शैलियों का परिचय।

भाषा - संगीत वाद्यों का वर्णन और संगीत में साहित्यिक तत्व।

विज्ञान - संगीतात्मक नोट्स (स्वर), अंतराल, कम्पन की आवृत्ति, ध्वनि की रचना के सिद्धांत।

तत् वाद्य - तारदार वाद्य

तत् वाद्य, वाद्यों का एक ऐसा वर्ग है, जिनमें तार अथवा तन्त्री के कम्पन से ध्वनि उत्पन्न होती है। यह कम्पन तार पर उंगली छेड़ने या फिर तार पर गज चलाने से उत्पन्न होते हैं। कम्पित होने वाले तार की लम्बाई तथा उसको कसे जाने की क्षमता स्वर की ऊंचाई (स्वरमान) निश्चित करती है और कुछ हद तक ध्वनि की अवधि भी सुनिश्चित करती है।

तत् वाद्यों को मोटे पर दो भागों में विभाजित किया गया है-तत् वाद्य और वितत् वाद्य। आगे इन्हें सारिका (पर्दा) युक्त और सारिका विहीन (पर्दाहीन) वाद्यों के रूप में पुन: विभाजित किया जाता है।

हमारे देश में तत् वाद्यों का प्राचीनतम प्रमाण धनुष के आकार की बीन या वीणा है। इसमें रेशे या फिर पशु की अंतड़ियों से बनी भिन्न-भिन्न प्रकार की समानांतर तारें होती थीं। इसमें प्रत्येक स्वर के लिए एक तार होती थी, जिन्हें या तो उंगलियों से छेड़ कर या फिर कोना नामक मिज़राब से बजाया जाता था। संगीत के ग्रंथों में तत् (तारयुक्त वाद्यों) वाद्यों के लिए सामान्य रूप से 'वीणा' शब्द का प्रयोग किया जाता था और हमें एक तंत्री, सत-तंत्री वीणा आदि वाद्यों की जानकारी मिलती है। चित्र में सात तारें होती हैं और विपंची में नौ। चित्र को उंगलियों द्वारा बजाया जाता था और विपंची को मिज़राब से।

प्राचीन समय की बहुत-सी-मूर्तियों और भित्तिचित्रों से इनका उल्लेख प्राप्त होता है। जैसे भरहुत और सांची स्तूप, अमरावती के नक्काशीदार स्तम्भ आदि। दूसरी शताब्दी ईसवीं सन् के प्राचीन तमिल ग्रंथों में याड़ का उल्लेख प्राप्त होता है। धार्मिक अवसरों और समारोहों में ऐसे वाद्यों को बजाना महत्वपूर्ण रहा है। जब पुजारी और प्रस्तुतकर्ता गाते थे तो उनकी पत्नी वाद्यों को बजाती थीं।

डेलसिमर प्रकार के वाद्य तारयुक्त वाद्यों का एक अन्य वर्ग है। इसमें एक लकड़ी के बक्से पर तार खींच कर रखे जाते हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है-सौ तारों वाली वीणा अर्थात् सत-तंत्री वीणा। इस वर्ग का निकटतम सहयोगी वाद्य है-संतूर। यह आज भी कश्मीर तथा भारत के अन्य भागों में बजाया जाता है।

बाद में तारयुक्त वाद्यों के वर्ग में डांड युक्त वाद्यों के भी एक वर्ग का विकास हुआ। यह राग-संगीत से जुड़े, प्रचलित वाद्यों के लिए उपयुक्त था। चाहे वह पर्दे वाले वाद्य हों अथवा पर्दा विहीन वाद्य हों, उंगली से तार छेड़ कर बजाए जाने वाले वाद्य हों अथवा गज से बजाए जाने वाले-सभी इसी वर्ग में आते हैं। इन वाद्यों का सबसे बड़ा महत्व है-स्वर की उत्पत्ति की समृद्धि और स्वर की निरंतरता को बनाए रखना। डांड युक्त वाद्यों में सभी आवश्यक स्वर एक ही तार पर, तार की लम्बाई को उंगली द्वारा या धातु अथवा लकड़ी के किसी टुकड़े से दबा कर, परिवर्तित करके उत्पन्न किए जा सकते हैं। स्वरों के स्वरमान में परिवर्तन के लिए कंपायमान तार की लम्बाई का बढ़ना या घटना महत्वपूर्ण होता है।

गज वाले तार वाद्य आमतौर पर गायन के साथ संगत के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं तथा गीतानुगा के रूप में इनका उल्लेख किया जाता है। इन्हें दो मुख्य वर्गों में बांटा जा सकता है। पहले वर्ग में सारंगी के समान डांड को सीधे ऊपर की ओर रखा जाता है और दूसरे वर्ग में तुम्बे को कंधे की ओर रखा जाता है तथा 'डंडी' या डांड़ को वादक की बांह के पार रखा जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे-रावण हस्तवीणा, बनाम तथा वायलिन में।

लम्बवत् गजयुक्त वाद्यों के प्रकार सामान्यत: देश के उत्तरी भागों में पाए जाते हैं। इनमें आगे फिर से दो प्रकार होते हैं-सारिका (पर्दा) युक्त और सारिकाविहीन (पर्दाविहीन)।

- to study the evolution of music through depiction of musical instruments in paintings, sculptures, wherever possible;
- to study the inter-relationship of rural and sophisticated urban art forms;
- to understand the underlying principles of sound production based on the structure of the instruments and the material used;
- to establish the inter-dependence of different disciplines of creative expressions;
- to relate the study of music to:
- Geography—flora and fauna
- History—introduction of various styles of music and types of musical instruments in different periods in history;
- Language—description of musical instruments, and the literary content in music;
- Science—principles underlying production of sound, frequency of vibrations, intervals, musical notes.

Tata Vadya - Stringed Instruments

The *tata vadya* is a category of instruments in which sound is produced by the vibration of a string or chord. These vibrations are caused by plucking or by bowing on the string which has been pulled taut. The length of the vibrating string or wire, the degree to which it has been tightened, determines the pitch of the note and also to some extent the duration of the sound.

The *tata vadya* are divided into two broad categories—the plucked and the bowed, and further subdivided into the fretted and non-fretted variety.

The oldest evidence of stringed instruments in our land, however, are harps in the shape of the hunter's bow. They had a varying number of parallel strings made of fibre or gut. There used to be one string for each note, plucked either with the fingers or with the plectrum called the *kona*. *Veena* was the generic term for stringed instruments referred to in texts, and we have the *eka-tantri*, the *sata-tantri veena*, etc. The *Chitra* had seven strings and the *Vipanchi* nine; the first was played with the fingers and the second with a plectrum.

Representation of these can be found in many sculptures and murals of olden days, as for example, in the Bharhut and Sanchi Stupa, the reliefs of Amaravati and so on. Mention of Yazh are found in old Tamil texts from the 2nd century C.E. The playing of such instruments was an important part of ritual and ceremonies. As the priests and performers sang, their wives played on instruments.

Another class is of the dulcimer type, where a number of strings are stretched on a box of wood The best known of these was the *sata-tantri veena*—the hundred stringed veena. A close relative of this is the Santoor, a very popular instrument still played in Kashmir and other parts of India.

क) तारदार वाद्य के विविध हिस्से

अनुनादक (तुम्बा)-अधिकतर तारदार वाद्यों का तुम्बा या तो लकड़ी का बना होता है या फिर विशेष रूप से उगाए गए कद्दू का।

इस तुम्बे के ऊपर एक लकड़ी की एक पट्ट होती है, जिसे तबली कहते हैं। रखने की पट्टिका-डांड से जुड़ा होता है, जिसके ऊपरी अंतिम सिरे पर खूंटियां लगी होती हैं। इनको वाद्य में उपयुक्त स्वर मिलाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

तबली के ऊपर हाथीदांत से बना ब्रिज (घुड़च) होता है। मुख्य तार इस ब्रिज या घुड़च के ऊपर से होकर जाते हैं। कुछ वाद्यों में इन मुख्य तारों के नीचे कुछ अन्य तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। जब इन तारों को छेड़ा जाता है तो यह गूंज पैदा करते हैं।

कुछ वाद्यों में डांड पर धातु के पर्दे जुड़े होते हैं, जो स्थाई रूप से लगे होते हैं या फिर ऊपर-नीचे सरकाए जा सकते हैं। कुछ तार वाद्यों को उंगलियों से छेड़ कर या फिर कोना नामक छोटी मिज़राब की सहायता से बजाया जाता है। जबकि अन्य तार वाद्यों को गज की सहायता से बजाया जाता है। (देखें आरेख ए)

ख) स्वरों के स्थान

प्रस्तुत रेखाचित्र-स्वरों के स्थान तथा 36 इंच की तार पर सा रे म ग प ध नि सा स्वरों को दिखाता है। चित्र में स्वर की आंदोलन संख्या भी दिखाई गई है। (देखें आरेख बी)

A later development of stringed instruments are the fingerboard variety, which were most suited to *Raga Sangeet* and many of the prevalent instruments of the concert platform, whether fretted or non-fretted, bowed or plucked fall into this category. The great advantage of these instruments is the richness of tone production and continuity of sound. In the finger-board instruments all the required notes are produced on one chord (string or wire) by altering the length of the wire either by pressing it with a finger or a piece of metal or wood. This increase or decrease in the length of the vibrator wire is responsible for the changes in pitches of notes—*swaras*.

Bowed instruments are usually used as accompaniment to vocal music and are referred to as *Geetanuga*. They are divided into two broad categories—the upright and the inverted. In the first category the fingerboard is held straight up as in the case of *Sarangi* and in the second category, that is, in the inverted variety, the board or resonator is held towards the shoulder and the fingerboard *dandi* is held across the arm of the player as in the case of the *Ravanhastaveena*, the *Banam*, the Violin.

The variety of upright bowed instruments are generally seen in the northern areas of the country. In these there are again two varieties, the fretted and the non-fretted.

(a) Different parts of a stringed instrument

The resonator—*Toomba* of most stringed instruments is either made of wood or from a specially grown gourd.

Over this *Toomba* there is a plate of wood known as the *Tabli*. The resonator is attached to the fingerboard—the *Danda* at the top end of which are inserted the pegs—the *Khoontis*, for tuning the instrument.

On the *Tabli* there is a bridge made of ivory or bone. The main strings pass over the bridge, some instruments also have a number of sympathetic strings below the main strings. They are called the *Tarab*. When these strings vibrate, they add resonance to the sound.

On the fingerboard of *danda*, in some instruments, metal frets are attached which are either permanently fixed or are movable. Some stringed instruments are plucked with the fingers or by using a small plectrum called the *Kona*, while in others, sound is produced by bowing (See diagram 'A').

(b) Placement of Swaras

The line drawing shows placement of notes—the *swaras-Sa Re Ga Ma Pa Dha Ni Sa* on a 36" length of wire, the frequency of vibration of each note is also shown in the picture. (See diagram 'B').

क
A

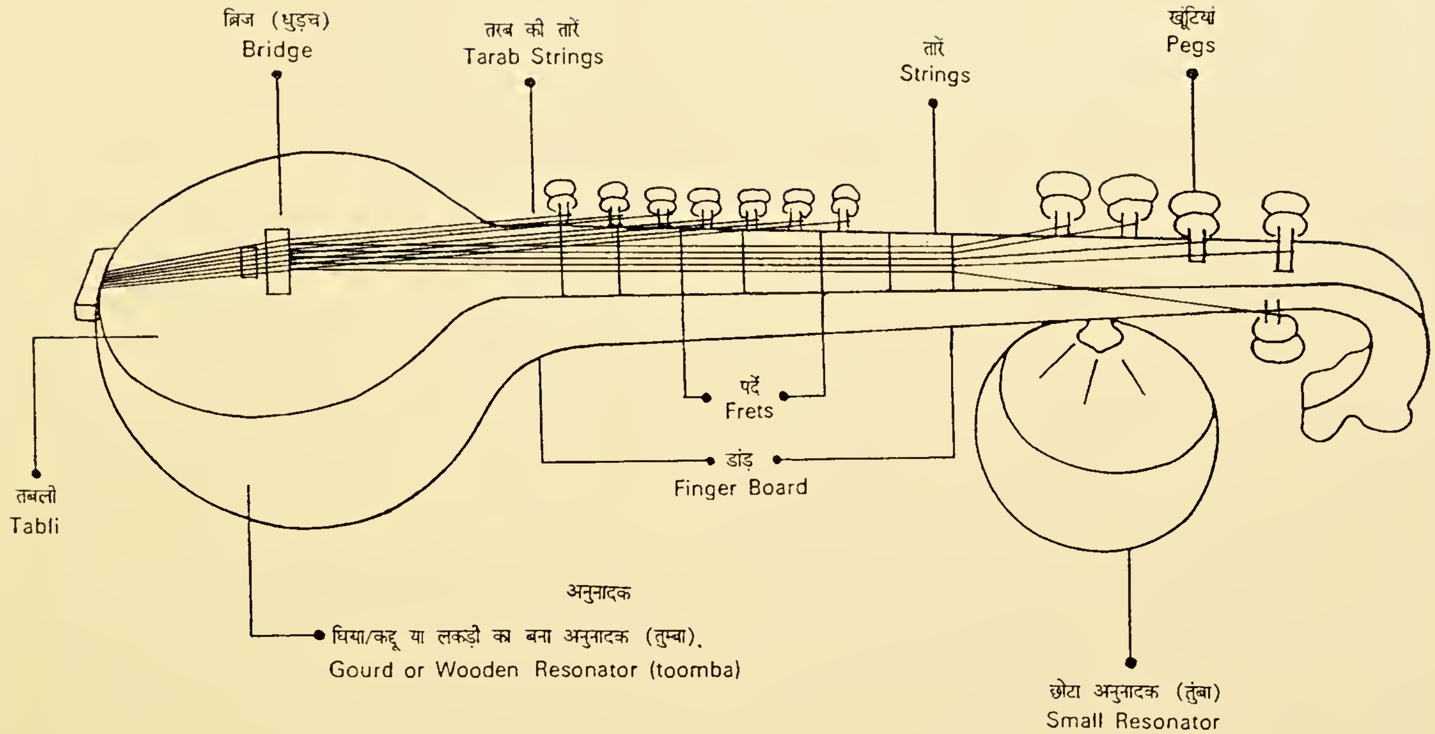

ख
B

सात स्वर
क) डांड पर खिंचे हुए 36 इंच के तार पर उनकी स्थापना
ख) आंदोलन संख्या

The seven notes
a) their placement on 36" (inch) wire stretched across the finger-board.
b) Measure of frequency of vibrations

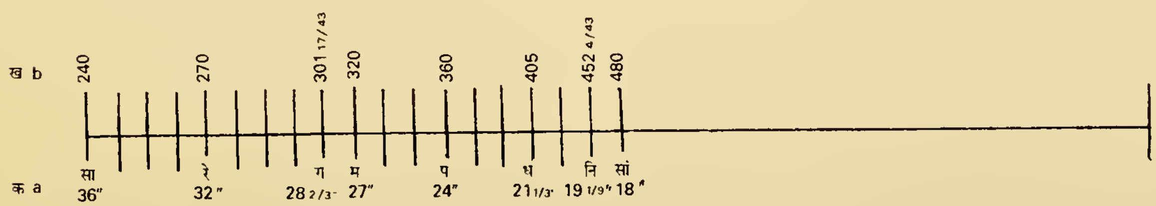

स्कूल के छात्रों और अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

Creative Activities for School Students and Teachers

इस शैक्षणिक संग्रह (पैकेज) में दिए गए चित्रों के अध्ययन के प्रभाव को बढ़ाने, उनकी सराहना करने और उनकी चर्चा करने के उद्देश्य से यहां पर कुछ अतिरिक्त गतिविधियों की जानकारी दी जा रही है। इन गतिविधियों को उद्देश्य सामान्य रूप से संगीत के क्षेत्र में छात्रों के दृष्टिकोण का विस्तार करना है। यह गतिविधियां आसानी से आयोजित की जा सकती हैं और साथ ही यह गतिविधियां ऐसी होनी चाहिए, जो छात्रों में संगीत और सम्बंधित शिक्षण के प्रति स्थायी रुचि विकसित करने में सहायक हो।

1. भारत में संगीत की सतत् परम्परा की स्थापना, अध्ययन के लिए आकर्षक विषय हो सकता है। छात्र एक 'समय-रेखा' अंकित करके चार्ट बना सकते हैं, जिसमें प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक के इतिहास के विधि युगों (कालों) को अंकित किया जा सकता है। (नवीन युगों को चार्ट में अतिरिक्त स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि उनमें सम्बंधित अधिक जानकारी उपलब्ध होगी।)

   इस समय-रेखा चार्ट पर सही ऐतिहासिक कालों के अनुसार देश के सभी भागों के गायकों, संगीतज्ञों, प्रसिद्ध संतों और रचनाकारों तथा भारत की संगीत परम्परा से जुड़े अन्य व्यक्तियों के नाम नोट किए जाने चाहिए। उपयुक्त स्थानों पर इन व्यक्तियों से सम्बंधित प्रदेशों या राज्यों/महत्वपूर्ण तिथियों, घटनाओं और संगीत में सहयोग को भी नोट किया जा सकता है।

   इस गतिविधि के पूरा होने पर आप जान सकेंगे कि सदियों से कितने ही अनगिनत व्यक्तियों और घटनाओं ने किस प्रकार और महान परम्परा को जीवित रखने में अपना योगदान दिया है।

2. छात्रों को अपने प्रदेश या फिर भारत का एक बड़ा मानचित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। (इसमें राज्य ठीक प्रकार से दिखाए जाने चाहिए) विभिन्न क्षेत्रें के गांवों तथा शहरों में प्रयुक्त संगीत वाद्यों के छोटे रेखाचित्र बनाए जा सकते हैं और उन्हें मानचित्र में दिखाया जा सकता है। इसमें इन वाद्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों अथवा समूहों के चित्र भी जोड़े जा सकते है। इसमें हमें यह जानकारी प्राप्त होगी कि यह वाद्य कैसे और कब प्रयोग में लाए गए? दुर्लभ वाद्यों को खोजने के लिए भी प्रयत्न किए जाने चाहिए।

3. हिन्दुस्तानी व कर्नाटक शैली (दोनों से सम्बंधित) प्रसिद्ध वादकों की सूची को एकत्रित किया जा सकता है। फिर छात्र इन महान वादकों के साथ जुड़े विविध पहलुओं को एकत्रित करके समूहों में कार्य कर सकते हैं।

   - उनकी (वादकों की) जीवन-गाथा
   - उन्होंने किस प्रकार संगीत सीखना आरम्भ किया?
   - उनके गुरु व संगीत के विद्यालय
   - संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान
   - उनके द्वारा संगीत पर लिखी गईं पुस्तकें
   - उनके संगीत के रिकार्ड्स व कॅसेट्स आदि की सूची बनाना।

इस जानकारी का सारांश चित्रात्मक बनाकर अलग-अलग कार्डो पर आकर्षक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रत्येक वादक विशेष से सम्बंधित कार्ड को एक अलग पैकेट में एकत्रित करके रखा जा सकता है। इन्हें बाद में अध्ययन अथवा कक्षा के सूचना-पट्ट (नोटिस-बोर्ड) पर प्रदर्शन के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रकार की सामूहिक गतिविधियों के उत्तम परिणाम सामने आ सकते हैं।

4. छात्रों के एक समूह को 'वाचन मंडल' बनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा सकता है। छात्र-सदस्य समाचारपत्रों की कतरनों, पत्रिकाओं के लेखों और विविध स्रोतों से कार्यक्रम की समीक्षाएं एकत्रित कर सकते हैं। खाकी कागज

In order to enhance the effect of studying, appreciating and understanding the pictures in this package, a few activities are suggested. The aim of these activities is to widen the perspective of the students in the field of music, in general. These activities can be conducted easily and should enthuse the student to develop a lasting interest in music and related disciplines.

1. Establishing the continuity of music in India can form a fascinating subject for study. Students can prepare a chart projecting a 'time-line' on which are marked various eras of history, from the early periods to the present times. (Extra space should be provided for the recent periods, since more facts will be available).

   On this time-line chart the names of famous singers, musicians, saints and composers from all parts of the country and others linked with the musical traditions of India, should be noted down in the proper historical periods. Regions or States to which these people belong, important dates, events and contribution made to music, can also be entered at relevant places.

   On completion of this activity, one can realize how innumerable people and events through the ages, have contributed to keep a great tradition alive.

2. Students can be asked to make a large map of the region to which they belong or of India (with the States clearly demarcated). Small line-drawings of the musical instruments used both in villages and towns found in the different areas, can be prepared and placed in position on the map. Pictures/ photographs of people or groups using these instruments can also be added. This will give one a clearer idea of how and when these musical instruments are used. An effort should be made to find rare instruments.

3. A list of very famous instrumentalists belonging to both the Hindustani and Carnatic styles may be prepared. Then, students can work in groups, to complete facts regarding various aspects connected with these great instrumentalists;

   - their life stories
   - how they began learning music
   - their gurus and schools of music
   - their contribution of music
   - books written by them
   - listing of records and cassettes of their music, etc.

The gist of this information can be attractively displayed on separate cards with picture illustrations. Cards pertaining to each particular instrumentalist, can be put together in separate packets. These can be used later for study or even displayed on the class notice-board. Group activities such as this can produce excellent results.

4. A group of students can be encouraged to form a 'Reading Circle'. Student members can collect newspaper cuttings,

की शीट का प्रयोग करके, इस चुनी हुई सामग्री को सलीके से एक साथ व्यवस्थित करके एक स्क्रैप बुक (कतरन रजिस्टर) का रूप दिया जा सकता है। बाद में छात्र इनका आपस में आदान-प्रदान भी कर सकते हैं।

पढ़ने की आदत को बढ़ाने के लिए समूह द्वारा संगीत पर पुस्तकों को एकत्रित किया जा सकता है। 'सामूहिक वाचन' के सत्र आयोजित किए जाने चाहिए तथा जहां आवश्यक हो, वहां पढ़ने के बाद जानकारी का विस्तृत विवरण दिया जाना चाहिए और चर्चाएं भी होनी चाहिए।

5. जो छात्र संगीत सुनने में गहरी रुचि रखते हैं, उनका एक 'श्रोता समूह' भी बनाया जा सकता है। उनके लिए नियमित रूप से रिकार्ड, कॅसेट्स व वीडियो टेप बजाए जा सकते हैं (छात्र जिस संगीत को सुनते हैं, उनके प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण बनाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इससे उन्हें स्वत: यह निर्णय लेने में सहायता मिलेगी कि कौन-सा संगीत अच्छा है तथा अच्छे संगीत के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ेगी।

साथ ही, सदस्यों के लिए संगीत के कार्यक्रमों, मंदिर उत्सवों, उत्सवों आदि में भाग लेने के लिए अतिरिक्त व्यवस्था की जानी चाहिए क्योंकि केवल संगीत से लगातार जुड़े रहने पर ही उसके प्रति गहन रुचि विकसित हो सकेगी।

6. संगीत वाद्यों को एक युग के समाज, उससे सम्बंधित व्यक्तियों और कला के साथ उनके परिचय (संगीत, नृत्य आदि) की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक जीवंत प्रमाण के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

इस फोलियो (पत्रों) में दिए गए प्रासंगिक चित्रों जैसे नं. 1, 2, 3, 10, 11 और 13 का उपयोग करते हुए छात्रों को प्रयत्न करने चाहिए और अपने आप निष्कर्ष निकालने चाहिए। उन्हें प्रत्येक चित्र पर एक अनुच्छेद लिखना चाहिए। इसमें संगीतकारों के विषय में उन्हें अपनी राय देनी चाहिए और यह बताना चाहिए कि उनके जीवन में संगीत की क्या भागीदारी रही? छात्र अपने विचारों के समर्थन के लिए सहायक रूप में अन्य चित्रों की भी खोज कर सकते हैं।

magazine articles and reviews of performances from various sources. Using brown paper sheets, selected items can be neatly put together in 'Scrap Books' which can later be circulated.

To encourage the reading habit, simple books on music may be acquired by the group. Sessions of 'group reading' should be organised with explanations and discussions following, where necessary.

5. A listeners' group, consisting of those who are deeply interested in music can be formed. Records, cassettes and video tapes can be played regularly. (Students should be trained to form a critical view of the music they listen to, thus helping them to form individual judgement and taste for good music.)

In addition, arrangements should also be made for the members to attend music concerts, temple festivals, *Utsav*, etc. It is only a continued exposure to music that will help in the growth of a deep-rooted interest.

6. Musical instruments can be used as tangible material evidence for gaining information about an era—its society, the people and the extent of their familiarity with the arts (music, dance, etc.)

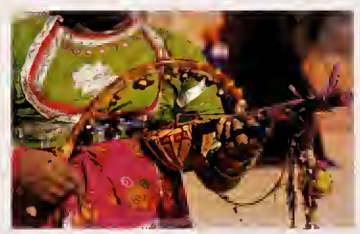

7. जानकारी प्राप्त करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन एक रुचिकर माध्यम है। प्रत्येक छात्र को परम्परागत संगीत में आमतौर पर प्रयुक्त होने एक तार वाद्य प्रदर्शनात्मक मंच पर प्रचलित एक अन्य तार वाद्य को चुनने के लिए कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ बनाम और सारंगी, पेना और वायलिन। वाद्यों की प्रत्येक जोड़ी का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने और दोनों वाद्यों के बीच बहुत-सी समानताओं और असमानताओं का पता लगाने के लिए छात्रों का मार्गदर्शन किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर-

- वाद्य में प्रयुक्त सामग्री
- डिज़ायन (बनावट)
- सजावट
- बजाने की शैली
- स्वर-सम्बंधी विशेषताएं आदि।

चित्रों तथा रेखाचित्रों की सहायता से प्रत्येक वाद्य की मुख्य विशेषताएं एक चार्ट पर चिह्नित (नोट) की जा सकती हैं। यदि प्रत्येक छात्र तार वाद्यों की एक भिन्न जोड़ी को चुनता है तो अध्ययन अधिक परिपूर्ण होगा।

(चार्ट पर प्रदर्शित तथा एकत्रित की गई सामग्री के आधार पर, छात्रों द्वारा ग्रहण की गई जानकारी की परीक्षा लेने के लिए एक प्रश्नोत्तरी आयोजित की जा सकती है।)

8. प्रत्येक संगीत वाद्य के निर्माण के पीछे एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। छात्रों के समूह कुछ विशेष तार वाद्य सुन सकते हैं। वे ध्वनि पर प्रयोग कर सकते हैं और वाद्यों को बजाने के तरीके को समझ सकते हैं।

   वे वाद्यों के विविध भागों के महत्व की भी चर्चा कर सकते हैं। उदाहणार्थ ब्रिज (घुड़च), तार, खोखला तुम्बा, पर्दे आदि।

   जिन छात्रों ने अपने प्रयोग को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है, उन्हें कक्षा में इन प्रयोगों का प्रदर्शन करने के लिए कहा जा सकता है। इससे संगीत वाद्यों के विषय में कुछ वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

9. एक ही तार वाद्य को केन्द्र मान कर, छात्रों को दृश्यात्मक चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है और इन वाद्यों पर बनाए जाने वाले संगीत द्वारा उत्पन्न वातावरण को अभिव्यक्त करने वाला दृश्यात्मक चित्र बनाया जा सकता है। इन वाद्यों को बजाने से उत्पन्न होने वाले वातावरण को अभिव्यक्त किया जा सकता है। जैसे सितार, वीणा, सरोद आदि। रंगों तथा निरर्थक रूपों का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसमें प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया भिन्न होगी और प्रत्येक छात्र यह अनुभव करेगा कि किस प्रकार से एक ही प्रकार का संगीत विभिन्न व्यक्तियों को, विविध प्रकार से प्रभावित करता है?

छात्रों द्वारा बनाए गए चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई जा सकती है।

आवरण : संगीतकार, गुप्त काल भीतरगांव, उ.प्र. Cover: Musician, Gupta Period, Bhitragaon, U.P.

Using relevant pictures given in this folio for examples, no. 1, 2, 3, 10, 11 and 13 students should try and deduce their own conclusions. They should then write a paragraph on each picture and given their idea of the people depicted and what part music played in their lives. Students can also find other pictures to support their viewpoints.

7. Comparative studies are an interesting means of gaining knowledge. Each student may be asked to choose one stringed instrument that is commonly used in traditional music and another stringed instrument which is popular on the concert platform, for example, the *banam* and the *sarangi*, the *pena* and the violin. The students may be guided to study each pair carefully and note down the commonalities and differences, for example,
   - material used
   - design
   - decoration
   - style of playing
   - tonal qualities, etc.

With pictures and sketches, the main features and qualities of each instrument, should be noted down on a flow chart. If each student chooses a different pair of stringed instruments, the study will be more complete.

(A quiz based on the material compiled and displayed on the flow chart can be organised to test the knowledge gained by the students).

8. The making of each musical instrument has a very scientific approach. They can conduct experiments on sound and understand the working of the instruments.

   They can also discuss the importance of various parts of the instruments, for example, the bridge, the strings, the hollow gourd, the frets, etc.

   Those who have completed the experiment successfully, can be asked to demonstrate their experiments to the class, thus helping all to gain some scientific knowledge regarding musical instruments.

9. Using one stringed instrument as the focal point, students can be asked to try and make visual picture-representations of the mood created by the music played on these instruments, for example, *sitar*, *veena*, *sarod*, etc. Colours and abstract forms can also be used. The reaction of each student will be different and each student will realise how the same music can effect different people in a different manner.

The drawings of the children can be put up as an exhibition.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
1

1. भीमबेटका, म.प्र. के चित्र

कुछ ही दशकों पूर्व जब भीमबेटका की पाषाण युग की गुफाओं की खोज की गई तो बहुत उत्साह उत्पन्न हुआ था। विद्वानों का मानना है कि यह गुफाएं 10,000 वर्ष पुरानी हैं और जो मानव समूह इन गुफाओं में रहे, उन्होंने दीवारों पर चित्रकला तथा खुदाई द्वारा जो चित्र बना कर छोड़े हैं, वे शिकार, नृत्य और संगीत जैसे प्रतिदिन के जीवन-दृश्यों को प्रस्तुत करते हैं। जब पुरातत्ववेत्ताओं ने इन दीवारों को कुरेदा तो चित्रों की कई परतें सामने आईं।

कहा जाता है कि इस चित्र में दिखाई देने वाली तीर के आकार की बीन 5,000 वर्ष पुरानी है। शायद यह भारत में तार वाद्यों का सर्वाधिक प्राचीन प्रमाण है। ऐसा सम्भव है कि वह वाद्य बांस और पशु की अँतड़ियों से बना हो। यह बाद के समय के संगीत ग्रंथों में प्राप्त वाद्य-चित्र या फिर सात तारों वाली वीन का ही एक रूप लगता है।

2. नृत्य का दृश्य, शिल्पयुक्त फलक, ग्वालियर, म.प्र.

भारतीय इतिहास का गुप्त काल अपनी कलात्मक तथा बौद्धिक उपलब्धियों में उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। इस काल में महान कवियों, दार्शनिकों और संगीतकारों ने राजाओं, राजसी पुरुषों तथा जन-साधारण से बड़े स्तर पर समर्थन प्राप्त किया। नर्तकों ने विशेष सम्मान प्राप्त किया। यहां संगीतकारों के साथ नृत्य को प्रदर्शित करने वाली इस काल की बहुत सी मूर्तियां हैं। 5वीं शताब्दी ईसवी सन् के इस चित्र में संगीतज्ञ एक नर्तक के साथ संगति करते देखे जा सकते हैं। संगीतकारों को दो प्रकार के तार वाद्य बजाते हुए दिखाया गया है-एक धनुष के आकार की बीन और एक डांड युक्त वाद्य, जो आधुनिक सरोद से मिलता-जुलता है। ऊपर बांयी ओर लम्बवत् ढोलों की एक जोड़ी भी देखी जा सकती है। डांड वाले तार वाद्यों में एक ही तार पर बहुत से स्वर निकाले जा सकते हैं। इससे स्वर अधिक समय तक कायम रहता है और मनोहर स्वर, गमक तथा श्रुतियां उत्पन्न की जा सकती हैं।

3. संगीतकार तथा नर्तक-सांची स्तूप, शिल्पयुक्त फलक

सांची स्तूप को दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरे शताब्दी ईसवी सन् के मध्य बनाया गया तथा इसको पुनरुद्धार किया गया। पत्थर के घेरे और तोरणों के साथ-साथ एक महीन नक्काशी का फलक है, जो महात्मा बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं की घटनाओं को वर्णित करता है। इस शिल्प में नागा एक नृत्य के कार्यक्रम को देख रहे हैं। संगत करने वाली महिला संगीतकार एक तीर के आकार की बीन बजा रही है।

4. धनुष के आकार वाली वीणा

धनुष के आकार वाली धनुरवीणा या बीन, जिसे आप चित्र में देख रहे हैं, प्रचार में नहीं है, इसका कारण यह है कि यह कठिन स्वरों के मेल को प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं है। जबकि इसकी बनावट दिलचस्प है और इसका तुम्बा घीया या कद्दू से बना होता है। इसे विशेष रूप से सुखाया जाता है तथा खोखला किया जाता है। इसके बाद इसे पशु की खाल से ढका जाता है। तुम्बे के ऊपर से होकर सात तारें गुजरती हैं। फिर तारों को खूंटियों से जोड़ दिया जाता है, जो वक्र बांस के डांड में डाल दी जाती हैं। प्रत्येक स्वर के लिए एक तार होती है। इस वाद्य की बनावट प्रागैतिहासिक गुफाओं के चित्रें तथा तत्पश्चात् पहली से पांचवीं शताब्दी ईसवी सन् के शिल्पों में दिखाए गए वाद्य से मिलती-जुलती है।

5. जन्तर

जन्तर पर्दायुक्त वीणा का ही एक प्रकार है। यह बनावट में समकालीन रुद्र वीणा और सरस्वती वीणा से बहुत ही मिलता-जुलता वाद्य है। इन सभी वाद्यों में लकड़ी अथवा लौकी (कद्दू) से बने दो तुम्बे होते हैं। जन्तर के निचले अंतिम हिस्से का तुम्बा विशेष रूप से उगाये गए कद्दू से बना होता है। इससे एक ग्रीवा बाहर निकलती है, जो डांड से जुड़ती है और उसमें अतिरिक्त गूंज देने के लिए ऊपरी अंतिम सिरे में एक छोटा कद्दू या लौकी का बना तुम्बा होता है। तारों को उंगलियों से छेड़ कर बजाया जाता है।

इस चित्र में दिखाया गया जन्तर राजस्थान का है। यह उंगली से छेड़ कर बजाया जाने वाला तार वाद्य है, जिसे सामान्यत: मंदिर के अहाते में पेड़ पर चित्रित देवनारायण की कहानियां कहते हुए गायक बजाते हैं या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुए परम्परागत गीत तथा गाथा-गीत वाले पुरोहित भी इस वाद्य का उपयोग करते हैं।

6. रुद्र वीणा

उत्तर की बीन या रुद्र वीणा में जन्तर की ही भांति दो तुम्बे होते हैं। रुद्र वीणा के डांड पर बहुत-से पर्दे होते हैं, जिन्हें मोम की सहायता से चिपकाया जाता है इसलिए यह हिल नहीं सकते। अन्य बहुत-सी भारतीय वीणाओं की तरह से इनके किनारे पतले होते हैं। कम्पित होने वाली तार की लम्बाई स्वर का स्वर-मान (स्तर) निश्चित करती है, जिसे तार को उंगली से दबा कर नियंत्रित किया जाता है। इस प्रकार एक ही तार पर बहुत-से स्वर उत्पन्न होते हैं। इसमें चार तार होते हैं, जो तबली पर स्थित चौड़े ब्रिज या घुड़च से होकर गुजरते हैं। एक ओर तीन अतिरिक्त तार और दूसरी ओर के अन्य तार झाला (तेज़ी से बजने वाले स्वरों के सम्मिश्रण) को बजाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। अन्य तार वाद्यों की भांति इस वाद्य को खूंटियां कस कर मिलाया जाता है। बजाते हुए इस वाद्य को तिरछा करके पकड़ा जाता है और ऊपर कद्दू का बना तुम्बा बायें कंधे पर टिका होता है।

आप देखेंगे कि रुद्र वीणा बनावट में जन्तर से बहुत-कुछ मिलती-जुलती होने पर भी नक्काशी तथा हाथी दांत के जड़ाऊ काम से सज्जित हैं। हिन्दुस्तानी संगीत की सर्वाधिक परिष्कृत शैलियों-ध्रुपद और धमार को इस वाद्य पर बजाया जाता है और ताल की संगत पखावज नामक आड़े ढोल से प्रदान की जाती है।

7. सरस्वती वीणा

दक्षिण भारत की वीणा पूरी तरह से लकड़ी की बनी होती है क्योंकि दक्षिण प्रदेश में प्राप्त होने वाली लकड़ी ध्वनि की गुणवत्ता में वृद्धि करती है। सरस्वती वीणा में मुख्य तुम्बा और ग्रीवा एक ही लकड़ी के टुकड़े से बने होते हैं। डांड भी लकड़ी का बना होता है पर वह अलग से बना कर ग्रीवा के साथ जोड़ा जाता है। जब सम्पूर्ण वाद्य को एक ही लकड़ी के लट्ठे (टुकड़े) से बनाया जाता है तो इसे एकंद वीणा के नाम से जाना जाता है। ऐसी वीणा में ध्वनि की गुणवत्ता बहुत अनुनादक होती है। ब्रिज या घुड़च से होकर चार धातु के तार जाते हैं, जिन्हें सा प सा प स्वरों में मिलाया जाता है। इसमें तीन और अतिरिक्त तार होते हैं, जिन्हें सारणी कहा जाता है। इन्हें ताल देने के लिए उपयोग में लाया जाता है। धातु के पर्दे चौड़े होते हैं और इन्हें डांड पर मोम से जोड़ा जाता है। मुख्य तुम्बा नीचे रखा जाता है और वाद्य को बजाते हुए हल्के हाथों से तिरछा करके बायीं बांह के नीचे पकड़ा जाता है। रुद्र वीणा और सरस्वती वीणा उत्कर्षित वाद्य है। संगीतकार तारों को छेड़ने के लिए कोना या गज अथवा दाहिने हाथ की उंगलियों में मिज़राब का प्रयोग करते हैं।

8. गोट्टूवाद्यम्

तार वाद्यों का एक वर्ग पर्दाविहीन वीणाओं का है। गोट्टूवाद्यम् दक्षिणी प्रदेश का एक पर्दाविहीन प्रचलित वाद्य है। इसमें दो तुम्बे होते हैं, जिन्हें डांड की सहायता से परस्पर जोड़ा जाता है। इसके ऊपर से होकर चार तार और अन्य तीन धातु के तार गुजरते हैं। इन्हें डांड के दूसरे अंतिम सिरे पर सात लकड़ी की खूंटियों से जोड़ा जाता है। मुख्य तारों के समानांतर बाहर गूंज वाली तारें होती हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। लकड़ी का खोखला डांड 30 इंच लम्बा और 4 इंच चौड़ा होता है। तारों को छेड़ने के लिए दायें हाथ की उंगलियों में तीन धातु की मिज़राबें पहनी जाती हैं। बायें हाथ में एक बेलनाकार लकड़ी का टुकड़ा या फिर एक कांच का टुकड़ा होता है, जिसे राग के लिए आवश्यक स्वरों को उत्पन्न करने हेतु तारों पर घुमाया जाता है।

इस चित्र में आप गोट्टूवाद्यम् का कार्यक्रम-प्रदर्शन देख सकते हैं। ताल की संगत मृदंग तथा घटम् से की गई है।

9. संगीतकार, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश स्थित खजुराहो के मंदिर 10वीं, 11वीं और 12वीं शताब्दी ईसवी सन् में निर्मित किए गए। इन मंदिरों की बाहरी दीवारों पर पौराणिक कथाओं तथा दंतकथाओं की घटनाएं प्रचुर मात्र में खुदी हुई हैं। इनमें वाद्यों को बजाते हुए नर्तकों और संगीतकारों के दृश्य प्रदर्शित किए गए हैं। यह दृश्य उस काल में प्रयुक्त किए जाने वाले वाद्यों के विविध प्रकारों के बारे में हमें जानकारी देता है। एक आले में, एक संगीतकार को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है, जो वर्तमान समय में उत्तर भारत में प्रचलित डांड युक्त तार वाले वाद्यों से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

10. सरोद

सरोद की एक विशिष्ट बनावट है, जो अन्य समकालीन वीणाओं से काफी हद तक भिन्न है। वाद्य का ढांचा लकड़ी का बना होता है, जिसे थोड़े पतले चमड़े की परत और धातु की परत से ढका जाता है। इसमें धातु के बने सात मुख्य तार होते हैं, जो हाथी दांत के बने ब्रिज या घुड़च से होकर गुजरते हैं और ये तार डांड के एक ओर लकड़ी की खूंटियों से जुड़े होते हैं। सरोद का डांड पतली धातु की प्लेट के साथ लगा होता है और इसमें पर्दे नहीं होते। इससे धातु के डांड पर स्थित तारों पर उंगलियां अच्छी तरह से चल सकती हैं। इसमें मुख्य तारों के नीचे करीब पंद्रह गूंज प्रदान करने वाले तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। इसे दायें हाथ में हाथी दांत की मिज़राब को पकड़ कर बजाया जाता है, जबकि बायाँ हाथ तार पर ऊपर-नीचे घूमता है, ताकि बजाए जाने वाले स्वर-समूह या राग के लिए आवश्यक स्वरों की उत्पत्ति की जा सके।

11. रागिनी गुर्जरी तोड़ी, कांगड़ा शैली, 18वीं शताब्दी

16वीं, 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान, पंजाब की पहाड़ियों और हिमाचल प्रदेश में चित्रकला की कई शैलियां प्रचलित हुईं। चित्र, कागज पर प्राकृतिक खनिजों और चटानों से तैयार किए गए कोमल रंगों से बनाए जाते थे। चित्रों में विविध विषयों को लिया गया है और इन चित्रें ने पांडुलिपियों तथा ग्रंथों आदि के लिए प्रदर्शन-सामग्री प्रदान की है। इस चित्र में एक स्त्री को वीणा बजाते हुए दर्शाया गया है, जो आज के जन्तर और रुद्र वीणा की बनावट से मिलता-जुलता है। डांड के दोनों सिरों पर अनुनादक की तरह से काम करने वाले दो तुम्बे देखिए। हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि यह एक पर्दायुक्त वाद्य है।

यह चित्र लघुचित्रों की रागमाला शृंखला से संबंधित है। राग तोड़ी में आमतौर पर एक हिरण को वीणा वादक के समीप पहुंचते हुए दर्शाया जाता है।

12. सितार

सितार उत्तर भारत का एक बहुत ही प्रचलित समकालीन तार वाद्य है। यह एक लम्बी डांड के साथ पर्दायुक्त वीणा है। डांड कद्दू (लौकी) से बने तुम्बे से जुड़ा हुआ है। चौड़े ब्रिज (घुड़च) के ऊपर से और पर्दायुक्त डांड के साथ-साथ पांच धातु की तारें होकर गुजरती हैं। इन्हें नीचे के सप्तक (मंद्र सप्तक) के म सा प सा और प में मिलाया जाता है। ब्रिज या घुड़च के नीचे गूंज पैदा करने वाले तारों का एक समूह होता है, जिन्हें तरब कहा जाता है। सितार के पर्दे (सारिका) ऊपर-नीचे सरकाए जा सकते हैं और वे बजाए जाने वाले राग के स्वरों के अनुकूल ठीक स्थान पर स्थापित किए जाते हैं। सितार को मिज़राब की सहायता से बजाया जाता है। यह एक छोटी त्रिकोण आकार की तार होती है, जिसे दाहिने हाथ की उंगली में पहन कर तार को छेड़ा जाता है।

13. वीणा लिए हुए स्त्री, मूर्ति शिल्प, भुवनेश्वर, ओड़िशा

ओड़िशा के मंदिरों में प्राप्त बहुत-से मूर्ति शिल्पों में, पारंपरिक ओड़िशी मुद्राओं में नर्तक, दैनिक जनजीवन के दृश्य और विविध संगीतात्मक वाद्यों को बजाते संगीतकारों को प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत चित्र में आप ओड़िशा स्थित भुवनेश्वर के मुक्तेश्वर मंदिर की थोड़ी क्षतिग्रस्त मूर्ति देख सकते हैं, जिसमें एक संगीतकार को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। इस वाद्य की संरचना अथवा बनावट जंतर तथा रुद्र वीणा से बहुत समानता रखती है। इस वीणा के, डांड से जुड़े हुए, अनुनादक के रूप में दो तुंबे हैं।

14. संगीतकार, मुगल चित्र, 17वीं शताब्दी

लगभग सन् 1625 के आसपास बनी इस शाही चित्रकृति में एक शिविर (तम्बू) के बाहर संगीतकारों को गाते हुए तथा तार युक्त (तत्) वाद्य बजाते हुए निदर्शित किया गया है। यह यात्री अवश्य ही रात में सोने के लिए तंबू लगाने के बाद आराम कर रहे होंगे।

ध्यान से देखिए, चित्र के पार्श्व में दूरवर्ती प्राकृतिक दृश्य के चित्रण के साथ इस चित्रकृति की यूरोपीय चित्र शैली की सभ्यता दिखाई देती है।

15. वायलिन (बेला)

हम आज जिस वायलिन को देखते हैं, वह आज से 300 वर्ष पूर्व पश्चिम से आया है। यह एकल वाद्य भी है तथा इसे कंठ-संगीत (गायन) के साथ संगत करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। यह पर्दाहीन, गजयुक्त वाद्य है, जिसकी चार तारें होती हैं, जो एक संकरे ब्रिज (घुड़च) से होकर गुजरती हैं। यह वाद्य विशेष तौर पर खोखली लकड़ी से बनाया जाता है। इसके तार सामान्यत: स्टील के होते हैं और म सा प रे अथवा सा प सा प स्वरों में मिलाए जाते हैं। इसे एक निश्चित कोण पर रखा जाता है और भारतीय संगीतकार इसे बजाते समय ज़मीन पर बैठते हैं। इसका गज सारंगी की तुलना में पतला और कभी-कभी लंबा होता है तथा गज के एक सिरे पर स्थाई रूप से बाल जुड़े होते हैं, जबकि दूसरे सिरे पर बालों का खिंचाव व्यवस्थित किया जा सकता है। पश्चिम में संगीतकार वायलिन बजाते हुए या तो खड़ा रहता है या फिर कुर्सी पर बैठता है।

16. वायलिन (बेला)-पटचित्र

पटचित्र लंबे कागज पर कथा चित्रित करने की शैली है, जिसे कथा-वाचकों द्वारा कथा के विविध प्रसंगों को प्रदर्शित करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। कथा-वाचक अपनी कथा को सुनाने के लिए एक गांव से दूसरे गांव तक घूमते हैं। कथा वाचन के साथ संगीत-वाद्यों और गीतों का प्रयोग किया जाता है।

इस पटचित्र में एक स्त्री को वॉयलिन (बेला) बजाते हुए दिखाया गया है।

17. सारंगी

सारंगी उत्तर भारत का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सारिका हीन (पर्दा हीन), गज से बजने वाला वाद्य है। इस वाद्य का ढांचा लकड़ी के एक टुकड़े से बनाया जाता है। अनुनादक (तुम्बे) के ठीक ऊपर इस वाद्य का आकार सिकुड़ जाता है, ताकि गज से बजाने में सुविधा हो सके। इस वाद्य का निचला हिस्सा चर्मपत्र से ढका रहता है, जबकि सबसे ऊपरी हिस्से में एक चौड़ी लकड़ी की पट्टी (प्लेट) होती है, जो खूंटियों के लिए बने एक बक्से जैसी बनावट में जाकर समाप्त होती है। राग को बजाने के लिए पशु की अँतड़ियों से बने तीन तार और एक पीतल का तार होता है। पहले तीन तारों को सा प सा में मिलाया जाता है और चौथे तार को ग य या म में मिलाया जाता है। हालांकि अधिकतर पहले दो तारों पर ही बजाने का काम किया जाता है। सभी चारों तार एक पतले या संकरे ब्रिज (घुड़च) के ऊपर से होकर गुजरते हैं और उन्हें खूंटियों को कसकर उपयुक्त स्वर में मिलाया जाता है। इसमें लगभग 18 तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। तरब-तारों का एक समूह होता है, जिन्हें मुख्य तारों के नीचे स्थापित किया जाता है और बजाए जाने वाले राग के स्वरों के अनुसार इन तारों को मिलाया जाता है। तब मुख्य तार पर आघात करके अथवा गज लगा कर स्वर उत्पन्न किया जाता है तब उसी स्वर में मिलाए गए तरब के तार भी कम्पित होते हैं और इस प्रकार से जो ध्वनि होती है, वह गंभीर और गूंज से पूर्ण होती है।

18. दिलरुबा

दिलरुबा एक पर्दायुक्त, गज से बजने वाला वाद्य है। इसे खड़ा करके बजाया जाता है। यह बंगाल में प्रचलित वाद्य-इसराज से मिलता-जुलता वाद्य है। दिलरुबा आकार में इसराज से थोड़ा बड़ा होता है। इसका तुम्बा एक पतले चमड़े की परत से ढका जाता है और इसे डांड के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें धातु से बने ऊपर-नीचे होने वाले पर्दे (सारिका) होते हैं। चार मुख्य तारों को म सा सा प स्वरों में मिलाया जाता है। उत्तर भारत के अन्य कई तार वाद्यों के समान ही दिलरुबा में भी 15 तरब के तार होते हैं। यह तार बजाए जाने वाले राग के स्वरों में मिलाए जाते हैं और यह तार ध्वनि की समृद्धता को बढ़ाते हैं।

19. कमैचा

कमैचा पश्चिम राजस्थान के *मगनियार* समुदाय द्वारा गज की सहायता से बजायी जाने वाली वीणा है। यह संपूर्ण वाद्य लकड़ी के एक ही टुकड़े से बना होता है, गोलाकार लकड़ी का हिस्सा गर्दन तथा डांड का रूप लेता है अनुनादक (तुंबा) चमड़े से मढ़ा होता है और ऊपरी भाग लकड़ी से ढका होता है। इसमें चार मुख्य तार होते हैं और कई सहायक तार होते हैं, जो पतले ब्रिज (घुड़च) से होकर गुजरते हैं।

कमैचा वाद्य उप महाद्वीप को पश्चिम एशिया और अफ्रीका से जोड़ता है और इसे कुछ विद्वान रावन हत्ता अथवा रावण हस्त वीणा के अपवाद स्वरूप प्राचीनतम वाद्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

20. बनाम

बनाम गज से बजने वाले वाद्य का ही एक प्रकार है। यह वाद्य अधिकतर बिहार और ओडिशा में पाया जाता है। इसका नाशपाती के आकार का ढांचा लकड़ी के एक टुकड़े पर खुदाई करके बनाया जाता है। फिर इसे पशु की खाल में मढ़ा जाता है और एक बड़े ऊपरी सिरे से जोड़ा जाता है, जो खुला हुआ होता है। डांड, जो कि संकरा होता है, खूंटियों के लिए एक छोटे से बक्से जैसे ढांचे में जाकर समाप्त होता है। ब्रिज या घुड़च के ऊपर से तीन सूत के या चमड़े के तार गुजरते हैं और इन्हें खूंटियों से कसकर खींचा जाता है। इस वाद्य को लोकगीतों की संगत करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

21. पेना

पेना एक छोटा गज से बजने वाला वाद्य है। यह वाद्य अधिकतर मणिपुर में पाया जाता है। पशु की खाल से मढ़ा हुआ एक छोटे नारियल का खोल इसके तुम्बे का काम देता है। इस नारियल के खोल से एक बांस अथवा लकड़ी की डंडी जुड़ी रहती है, जो डांड का काम देती है। यह पूरा वाद्य लम्बाई में करीब 45 से.मी. होता है। इसके तार अक्सर बालों का एक गुच्छा होते हैं, जिन्हें सीधे बांस से बांध दिया जाता है और इसलिए इसमें कोई खूंटिया नहीं होती। इसका ब्रिज या घुड़च संकरा होता है, जो गोलाकार होता है। इसका लम्बा गज लकड़ी का बना होता है और इससे बहुत-सी घंटियां जुड़ी रहती हैं, जो बजाते समय सुन्दर लयात्मक संगत प्रदान करती हैं। पेना मणिपुर में नृत्य तथा परम्परागत गायन दोनों की ही संगति के लिए उपयोग में लाया जाता है और इसे कुछ धार्मिक अनुष्ठानों पर भी बजाया जाता है।

22. रावन हत्ता (रावण हस्त वीणा)

रावन हत्ता अथवा रावण हस्त वीणा राजस्थान में प्रचलित गज से बजाया जाने वाला एक तार युक्त (तत्) वाद्य है। इस वाद्य द्वारा परंपरागत कथा-कथन की शैली 'पाबू जी का पड़' के प्रस्तुतीकरण में कंठ संगीत के साथ, संगति प्रदान की जाती है। कल्पित आकृति 'पाबू जी' की कथाओं को वस्त्र चीरक (स्क्रॉल) पर चित्रित किया जाता है। रात्रि में चीरक को दीवार के ऊपर खींच कर सीधा रखा जाता है या दो खंभों के आधार पर स्थापित किया जाता है। प्रस्तुत प्रसंग को विशिष्टता प्रदान करने हेतु कथा वाचक की पत्नी वर्णित दृश्य के समक्ष लालटेन को प्रकाश हेतु थामे रहती है।

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
1

1. भीमबेटका, म.प्र. के चित्र

कुछ ही दशकों पूर्व जब भीमबेटका की पाषाण युग की गुफाओं की खोज की गई तो बहुत उत्साह उत्पन्न हुआ था। विद्वानों का मानना है कि यह गुफाएं 10,000 वर्ष पुरानी हैं और जो मानव समूह इन गुफाओं में रहे, उन्होंने दीवारों पर चित्रकला तथा खुदाई द्वारा जो चित्र बना कर छोड़े हैं, वे शिकार, नृत्य और संगीत जैसे प्रतिदिन के जीवन-दृश्यों को प्रस्तुत करते हैं। जब पुरातत्ववेत्ताओं ने इन दीवारों को कुरेदा तो चित्रों की कई परतें सामने आईं।

कहा जाता है कि इस चित्र में दिखाई देने वाली तीर के आकार की बीन 5,000 वर्ष पुरानी है। शायद यह भारत में तार वाद्यों का सर्वाधिक प्राचीन प्रमाण है। ऐसा सम्भव है कि वह वाद्य बांस और पशु की अँतड़ियों से बना हो। यह बाद के समय के संगीत ग्रंथों में प्राप्त वाद्य-चित्र या फिर सात तारों वाली बीन का ही एक रूप लगता है।

2. नृत्य का दृश्य, शिल्पयुक्त फलक, ग्वालियर, म.प्र.

भारतीय इतिहास का गुप्त काल अपनी कलात्मक तथा बौद्धिक उपलब्धियों में उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। इस काल में महान कवियों, दार्शनिकों और संगीतकारों ने राजाओं, राजसी पुरुषों तथा जन-साधारण से बड़े स्तर पर समर्थन प्राप्त किया। नर्तकों ने विशेष सम्मान प्राप्त किया। यहां संगीतकारों के साथ नृत्य को प्रदर्शित करने वाली इस काल की बहुत सी मूर्तियां हैं। 5वीं शताब्दी ईसवी सन् के इस चित्र में संगीतज्ञ एक नर्तक के साथ संगति करते देखे जा सकते हैं। संगीतकारों को दो प्रकार के तार वाद्य बजाते हुए दिखाया गया है-एक धनुष के आकार की बीन और एक डांड युक्त वाद्य, जो आधुनिक सरोद से मिलता-जुलता है। ऊपर बांयी ओर लम्बवत् ढोलों की एक जोड़ी भी देखी जा सकती है। डांड वाले तार वाद्यों में एक ही तार पर बहुत से स्वर निकाले जा सकते हैं। इससे स्वर अधिक समय तक कायम रहता है और मनोहर स्वर, गमक तथा श्रुतियां उत्पन्न की जा सकती हैं।

3. संगीतकार तथा नर्तक-सांची स्तूप, शिल्पयुक्त फलक

सांची स्तूप को दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरे शताब्दी ईसवी सन् के मध्य बनाया गया तथा इसको पुनरुद्धार किया गया। पत्थर के घेरे और तोरणों के साथ-साथ एक महीन नक्काशी का फलक है, जो महात्मा बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं की घटनाओं को वर्णित करता है। इस शिल्प में नागा एक नृत्य के कार्यक्रम को देख रहे हैं। संगत करने वाली महिला संगीतकार एक तीर के आकार की बीन बजा रही है।

4. धनुष के आकार वाली वीणा

धनुष के आकार वाली धनुरवीणा या बीन, जिसे आप चित्र में देख रहे हैं, प्रचार में नहीं है, इसका कारण यह है कि यह कठिन स्वरों के मेल को प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं है। जबकि इसकी बनावट दिलचस्प है और इसका तुम्बा घीया या कद्दू से बना होता है। इसे विशेष रूप से सुखाया जाता है तथा खोखला किया जाता है। इसके बाद इसे पशु की खाल से ढका जाता है। तुम्बे के ऊपर से होकर सात तारें गुजरती हैं। फिर तारों को खूंटियों से जोड़ दिया जाता है, जो वक्र बांस के डांड में डाल दी जाती हैं। प्रत्येक स्वर के लिए एक तार होती है। इस वाद्य की बनावट प्रागैतिहासिक गुफाओं के चित्रें तथा तत्पश्चात् पहली से पांचवीं शताब्दी ईसवी सन् के शिल्पों में दिखाए गए वाद्य से मिलती-जुलती है।

5. जन्तर

जन्तर पर्दायुक्त वीणा का ही एक प्रकार है। यह बनावट में समकालीन रुद्र वीणा और सरस्वती वीणा से बहुत ही मिलता-जुलता वाद्य है। इन सभी वाद्यों में लकड़ी अथवा लौकी (कद्दू) से बने दो तुम्बे होते हैं। जन्तर के निचले अंतिम हिस्से का तुम्बा विशेष रूप से उगाये गए कद्दू से बना होता है। इससे एक ग्रीवा बाहर निकलती है, जो डांड से जुड़ती है और उसमें अतिरिक्त गूंज देने के लिए ऊपरी अंतिम सिरे में एक छोटा कद्दू या लौकी का बना तुम्बा होता है। तारों को उंगलियों से छेड़ कर बजाया जाता है।

इस चित्र में दिखाया गया जन्तर राजस्थान का है। यह उंगली से छेड़ कर बजाया जाने वाला तार वाद्य है, जिसे सामान्यत: मंदिर के अहाते में पेड़ पर चित्रित देवनारायण की कहानियां कहते हुए गायक बजाते हैं या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुए परम्परागत गीत तथा गाथा-गीत वाले पुरोहित भी इस वाद्य का उपयोग करते हैं।

6. रुद्र वीणा

उत्तर की बीन या रुद्र वीणा में जन्तर की ही भांति दो तुम्बे होते हैं। रुद्र वीणा के डांड पर बहुत-से पर्दे होते हैं, जिन्हें मोम की सहायता से चिपकाया जाता है इसलिए यह हिल नहीं सकते। अन्य बहुत-सी भारतीय वीणाओं की तरह से इनके किनारे पतले होते हैं। कम्पित होने वाली तार की लम्बाई स्वर का स्वर-मान (स्तर) निश्चित करती है, जिसे तार को उंगली से दबा कर नियंत्रित किया जाता है। इस प्रकार एक ही तार पर बहुत-से स्वर उत्पन्न होते हैं। इसमें चार तार होते हैं, जो तबली पर स्थित चौड़े ब्रिज या घुड़च से होकर गुजरते हैं। एक ओर तीन अतिरिक्त तार और दूसरी ओर के अन्य तार झाला (तेज़ी से बजने वाले स्वरों के सम्मिश्रण) को बजाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। अन्य तार वाद्यों की भांति इस वाद्य को खूंटियां कस कर मिलाया जाता है। बजाते हुए इस वाद्य को तिरछा करके पकड़ा जाता है और ऊपर कद्दू का बना तुम्बा बायें कंधे पर टिका होता है।

आप देखेंगे कि रुद्र वीणा बनावट में जन्तर से बहुत-कुछ मिलती-जुलती होने पर भी नक्काशी तथा हाथी दांत के जड़ाऊ काम से सज्जित हैं। हिन्दुस्तानी संगीत की सर्वाधिक परिष्कृत शैलियों-ध्रुपद और धमार को इस वाद्य पर बजाया जाता है और ताल की संगत पखावज नामक आड़े ढोल से प्रदान की जाती है।

7. सरस्वती वीणा

दक्षिण भारत की वीणा पूरी तरह से लकड़ी की बनी होती है क्योंकि दक्षिण प्रदेश में प्राप्त होने वाली लकड़ी ध्वनि की गुणवत्ता में वृद्धि करती है। सरस्वती वीणा में मुख्य तुम्बा और ग्रीवा एक ही लकड़ी के टुकड़े से बने होते हैं। डांड भी लकड़ी का बना होता है पर वह अलग से बना कर ग्रीवा के साथ जोड़ा जाता है। जब सम्पूर्ण वाद्य को एक ही लकड़ी के लट्ठे (टुकड़े) से बनाया जाता है तो इसे एकंद वीणा के नाम से जाना जाता है। ऐसी वीणा में ध्वनि की गुणवत्ता बहुत अनुनादक होती है। ब्रिज या घुड़च से होकर चार धातु के तार जाते हैं, जिन्हें सा प सा प स्वरों में मिलाया जाता है। इसमें तीन और अतिरिक्त तार होते हैं, जिन्हें सारणी कहा जाता है। इन्हें ताल देने के लिए उपयोग में लाया जाता है। धातु के पर्दे चौड़े होते हैं और इन्हें डांड पर मोम से जोड़ा जाता है। मुख्य तुम्बा नीचे रखा जाता है और वाद्य को बजाते हुए हल्के हाथों से तिरछा करके बांयीं बांह के नीचे पकड़ा जाता है। रुद्र वीणा और सरस्वती वीणा उत्कर्षित वाद्य है। संगीतकार तारों को छेड़ने के लिए कोना या गज अथवा दाहिने हाथ की उंगलियों में मिज़राब का प्रयोग करते हैं।

8. गोट्टूवाद्यम्

तार वाद्यों का एक वर्ग पर्दाविहीन वीणाओं का है। गोट्टूवाद्यम् दक्षिणी प्रदेश का एक पर्दाविहीन प्रचलित वाद्य है। इसमें दो तुम्बे होते हैं, जिन्हें डांड की सहायता से परस्पर जोड़ा जाता है। इसके ऊपर से होकर चार तार और अन्य तीन धातु के तार गुजरते हैं। इन्हें डांड के दूसरे अंतिम सिरे पर सात लकड़ी की खूंटियों से जोड़ा जाता है। मुख्य तारों के समानांतर बाहर गूंज वाली तारें होती हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। लकड़ी का खोखला डांड 30 इंच लम्बा और 4 इंच चौड़ा होता है। तारों को छेड़ने के लिए दायें हाथ की उंगलियों में तीन धातु की मिज़राबें पहनी जाती हैं। बायें हाथ में एक बेलनाकार लकड़ी का टुकड़ा या फिर एक कांच का टुकड़ा होता है, जिसे राग के लिए आवश्यक स्वरों को उत्पन्न करने हेतु तारों पर घुमाया जाता है।

इस चित्र में आप गोट्टूवाद्यम् का कार्यक्रम-प्रदर्शन देख सकते हैं। ताल की संगत मृदंग तथा घटम् से की गई है।

9. संगीतकार, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश स्थित खजुराहो के मंदिर 10वीं, 11वीं और 12वीं शताब्दी ईसवी सन् में निर्मित किए गए। इन मंदिरों की बाहरी दीवारों पर पौराणिक कथाओं तथा दंतकथाओं की घटनाएं प्रचुर मात्र में खुदी हुई हैं। इनमें वाद्यों को बजाते हुए नर्तकों और संगीतकारों के दृश्य प्रदर्शित किए गए हैं। यह दृश्य उस काल में प्रयुक्त किए जाने वाले वाद्यों के विविध प्रकारों के बारे में हमें जानकारी देता है। एक आले में, एक संगीतकार को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है, जो वर्तमान समय में उत्तर भारत में प्रचलित डांड युक्त तार वाले वाद्यों से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

10. सरोद

सरोद की एक विशिष्ट बनावट है, जो अन्य समकालीन वीणाओं से काफी हद तक भिन्न है। वाद्य का ढांचा लकड़ी का बना होता है, जिसे थोड़े पतले चमड़े की परत और धातु की परत से ढका जाता है। इसमें धातु के बने सात मुख्य तार होते हैं, जो हाथी दांत के बने ब्रिज या घुड़च से होकर गुजरते हैं और ये तार डांड के एक ओर लकड़ी की खूंटियों से जुड़े होते हैं। सरोद का डांड पतली धातु की प्लेट के साथ लगा होता है और इसमें पर्दे नहीं होते। इससे धातु के डांड पर स्थित तारों पर उंगलियां अच्छी तरह से चल सकती हैं। इसमें मुख्य तारों के नीचे करीब पंद्रह गूंज प्रदान करने वाले तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। इसे दायें हाथ में हाथी दांत की मिज़राब को पकड़ कर बजाया जाता है, जबकि बायाँ हाथ तार पर ऊपर-नीचे घूमता है, ताकि बजाए जाने वाले स्वर-समूह या राग के लिए आवश्यक स्वरों की उत्पत्ति की जा सके।

11. रागिनी गुर्जरी तोड़ी, कांगड़ा शैली, 18वीं शताब्दी

16वीं, 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान, पंजाब की पहाड़ियों और हिमाचल प्रदेश में चित्रकला की कई शैलियां प्रचलित हुईं। चित्र, कागज पर प्राकृतिक खनिजों और चटानों से तैयार किए गए कोमल रंगों से बनाए जाते थे। चित्रों में विविध विषयों को लिया गया है और इन चित्रें ने पांडुलिपियों तथा ग्रंथों आदि के लिए प्रदर्शन-सामग्री प्रदान की है। इस चित्र में एक स्त्री को वीणा बजाते हुए दर्शाया गया है, जो आज के जन्तर और रुद्र वीणा की बनावट से मिलता-जुलता है। डांड के दोनों सिरों पर अनुनादक की तरह से काम करने वाले दो तुम्बे देखिए। हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि यह एक पर्दायुक्त वाद्य है।

यह चित्र लघुचित्रों की रागमाला शृंखला से संबंधित है। राग तोड़ी में आमतौर पर एक हिरण को वीणा वादक के समीप पहुंचते हुए दर्शाया जाता है।

12. सितार

सितार उत्तर भारत का एक बहुत ही प्रचलित समकालीन तार वाद्य है। यह एक लम्बी डांड के साथ पर्दायुक्त वीणा है। डांड कद्दू (लौकी) से बने तुम्बे से जुड़ा हुआ है। चौड़े ब्रिज (घुड़च) के ऊपर से और पर्दायुक्त डांड के साथ-साथ पांच धातु की तारें होकर गुजरती हैं। इन्हें नीचे के सप्तक (मंद्र सप्तक) के म सा प सा और प में मिलाया जाता है। ब्रिज या घुड़च के नीचे गूंज पैदा करने वाले तारों का एक समूह होता है, जिन्हें तरब कहा जाता है। सितार के पर्दे (सारिका) ऊपर-नीचे सरकाए जा सकते हैं और वे बजाए जाने वाले राग के स्वरों के अनुकूल ठीक स्थान पर स्थापित किए जाते हैं। सितार को मिज़राब की सहायता से बजाया जाता है। यह एक छोटी त्रिकोण आकार की तार होती है, जिसे दाहिने हाथ की उंगली में पहन कर तार को छेड़ा जाता है।

13. वीणा लिए हुए स्त्री, मूर्ति शिल्प, भुवनेश्वर, ओड़िशा

ओड़िशा के मंदिरों में प्राप्त बहुत-से मूर्ति शिल्पों में, पारंपरिक ओड़िशी मुद्राओं में नर्तक, दैनिक जनजीवन के दृश्य और विविध संगीतात्मक वाद्यों को बजाते संगीतकारों को प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत चित्र में आप ओड़िशा स्थित भुवनेश्वर के मुक्तेश्वर मंदिर की थोड़ी क्षतिग्रस्त मूर्ति देख सकते हैं, जिसमें एक संगीतकार को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। इस वाद्य की संरचना अथवा बनावट जंतर तथा रुद्र वीणा से बहुत समानता रखती है। इस वीणा के, डांड से जुड़े हुए, अनुनादक के रूप में दो तुंबे हैं।

14. संगीतकार, मुगल चित्र, 17वीं शताब्दी

लगभग सन् 1625 के आसपास बनी इस शाही चित्रकृति में एक शिविर (तम्बू) के बाहर संगीतकारों को गाते हुए तथा तार युक्त (तत्) वाद्य बजाते हुए निदर्शित किया गया है। यह यात्री अवश्य ही रात में सोने के लिए तंबू लगाने के बाद आराम कर रहे होंगे।

ध्यान से देखिए, चित्र के पार्श्व में दूरवर्ती प्राकृतिक दृश्य के चित्रण के साथ इस चित्रकृति की यूरोपीय चित्र शैली की सभ्यता दिखाई देती है।

15. वायलिन (बेला)

हम आज जिस वायलिन को देखते हैं, वह आज से 300 वर्ष पूर्व पश्चिम से आया है। यह एकल वाद्य भी है तथा इसे कंठ-संगीत (गायन) के साथ संगत करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। यह पर्दाहीन, गजयुक्त वाद्य है, जिसकी चार तारें होती हैं, जो एक संकरे ब्रिज (घुड़च) से होकर गुजरती हैं। यह वाद्य विशेष तौर पर खोखली लकड़ी से बनाया जाता है। इसके तार सामान्यत: स्टील के होते हैं और म सा प रे अथवा सा प सा प स्वरों में मिलाए जाते हैं। इसे एक निश्चित कोण पर रखा जाता है और भारतीय संगीतकार इसे बजाते समय ज़मीन पर बैठते हैं। इसका गज सारंगी की तुलना में पतला और कभी-कभी लंबा होता है तथा गज के एक सिरे पर स्थाई रूप से बाल जुड़े होते हैं, जबकि दूसरे सिरे पर बालों का खिंचाव व्यवस्थित किया जा सकता है। पश्चिम में संगीतकार वायलिन बजाते हुए या तो खड़ा रहता है या फिर कुर्सी पर बैठता है।

16. वायलिन (बेला)-पटचित्र

पटचित्र लंबे कागज पर कथा चित्रित करने की शैली है, जिसे कथा-वाचकों द्वारा कथा के विविध प्रसंगों को प्रदर्शित करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। कथा-वाचक अपनी कथा को सुनाने के लिए एक गांव से दूसरे गांव तक घूमते हैं। कथा वाचन के साथ संगीत-वाद्यों और गीतों का प्रयोग किया जाता है।

इस पटचित्र में एक स्त्री को वॉयलिन (बेला) बजाते हुए दिखाया गया है।

17. सारंगी

सारंगी उत्तर भारत का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सारिका हीन (पर्दा हीन), गज से बजने वाला वाद्य है। इस वाद्य का ढांचा लकड़ी के एक टुकड़े से बनाया जाता है। अनुनादक (तुम्बे) के ठीक ऊपर इस वाद्य का आकार सिकुड़ जाता है, ताकि गज से बजाने में सुविधा हो सके। इस वाद्य का निचला हिस्सा चर्मपत्र से ढका रहता है, जबकि सबसे ऊपरी हिस्से में एक चौड़ी लकड़ी की पटी (प्लेट) होती है, जो खूंटियों के लिए बने एक बक्से जैसी बनावट में जाकर समाप्त होती है। राग को बजाने के लिए पशु की अँतड़ियों से बने तीन तार और एक पीतल का तार होता है। पहले तीन तारों को मा प सा में मिलाया जाता है और चौथे तार को ग य या म में मिलाया जाता है। हालांकि अधिकतर पहले दो तारों पर ही बजाने का काम किया जाता है। सभी चारों तार एक पतले या संकरे ब्रिज (घुड़च) के ऊपर से होकर गुजरते हैं और उन्हें खूंटियों को कसकर उपयुक्त स्वर में मिलाया जाता है। इसमें लगभग 18 तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। तरब-तारों का एक समूह होता है, जिन्हें मुख्य तारों के नीचे स्थापित किया जाता है और बजाए जाने वाले राग के स्वरों के अनुसार इन तारों को मिलाया जाता है। तब मुख्य तार पर आघात करके अथवा गज लगा कर स्वर उत्पन्न किया जाता है तब उसी स्वर में मिलाए गए तरब के तार भी कम्पित होते हैं और इस प्रकार से जो ध्वनि होती है, वह गंभीर और गूंज से पूर्ण होती है।

18. दिलरुबा

दिलरुबा एक पर्दायुक्त, गज से बजने वाला वाद्य है। इसे खड़ा करके बजाया जाता है। यह बंगाल में प्रचलित वाद्य-इसराज से मिलता-जुलता वाद्य है। दिलरुबा आकार में इसराज से थोड़ा बड़ा होता है। इसका तुम्बा एक पतले चमड़े की परत से ढका जाता है और इसे डांड के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें धातु से बने ऊपर-नीचे होने वाले पर्दे (सारिका) होते हैं। चार मुख्य तारों को म सा सा प स्वरों में मिलाया जाता है। उत्तर भारत के अन्य कई तार वाद्यों के समान ही दिलरुबा में भी 15 तरब के तार होते हैं। यह तार बजाए जाने वाले राग के स्वरों में मिलाए जाते हैं और यह तार ध्वनि की समृद्धता को बढ़ाते हैं।

19. कमैचा

कमैचा पश्चिम राजस्थान के *मगनियार* समुदाय द्वारा गज की सहायता से बजायी जाने वाली वीणा है। यह संपूर्ण वाद्य लकड़ी के एक ही टुकड़े से बना होता है, गोलाकार लकड़ी का हिस्सा गर्दन तथा डांड का रूप लेता है अनुनादक (तुंबा) चमड़े से मढ़ा होता है और ऊपरी भाग लकड़ी से ढका होता है। इसमें चार मुख्य तार होते हैं और कई सहायक तार होते हैं, जो पतले ब्रिज (घुड़च) से होकर गुजरते हैं।

कमैचा वाद्य उप महाद्वीप को पश्चिम एशिया और अफ्रीका से जोड़ता है और इसे कुछ विद्वान रावन हत्ता अथवा रावण हस्त वीणा के अपवाद स्वरूप प्राचीनतम वाद्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

20. बनाम

बनाम गज से बजने वाले वाद्य का ही एक प्रकार है। यह वाद्य अधिकतर बिहार और ओड़िशा में पाया जाता है। इसका नाशपाती के आकार का ढांचा लकड़ी के एक टुकड़े पर खुदाई करके बनाया जाता है। फिर इसे पशु की खाल में मढ़ा जाता है और एक बड़े ऊपरी सिरे से जोड़ा जाता है, जो खुला हुआ होता है। डाड, जो कि संकरा होता है, खूंटियों के लिए एक छोटे से बक्से जैसे ढांचे में जाकर समाप्त होता है। ब्रिज या घुड़च के ऊपर से तीन सूत के या चमड़े के तार गुजरते हैं और इन्हें खूंटियों से कसकर खींचा जाता है। इस वाद्य को लोकगीतों की संगत करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

21. पेना

पेना एक छोटा गज से बजने वाला वाद्य है। यह वाद्य अधिकतर मणिपुर में पाया जाता है। पशु की खाल से मढ़ा हुआ एक छोटे नारियल का खोल इसके तुम्बे का काम देता है। इस नारियल के खोल से एक बांस अथवा लकड़ी की डंडी जुड़ी रहती है, जो डांड का काम देती है। यह पूरा वाद्य लम्बाई में करीब 45 से.मी. होता है। इसके तार अक्सर बालों का एक गुच्छा होते हैं, जिन्हें सीधे बांस से बांध दिया जाता है और इसलिए इसमें कोई खूंटिया नहीं होती। इसका ब्रिज या घुड़च संकरा होता है, जो गोलाकार होता है। इसका लम्बा गज लकड़ी का बना होता है और इससे बहुत-सी घंटियां जुड़ी रहती हैं, जो बजाते समय सुन्दर लयात्मक संगत प्रदान करती हैं। पेना मणिपुर में नृत्य तथा परम्परागत गायन दोनों की ही संगति के लिए उपयोग में लाया जाता है और इसे कुछ धार्मिक अनुष्ठानों पर भी बजाया जाता है।

22. रावन हत्ता (रावण हस्त वीणा)

रावन हत्ता अथवा रावण हस्त वीणा राजस्थान में प्रचलित गज से बजाया जाने वाला एक तार युक्त (तत्) वाद्य है। इस वाद्य द्वारा परंपरागत कथा-कथन की शैली 'पाबू जी का पड़' के प्रस्तुतीकरण में कंठ संगीत के साथ, संगति प्रदान की जाती है। कल्पित आकृति 'पाबू जी' की कथाओं को वस्त्र चीरक (स्क्रॉल) पर चित्रित किया जाता है। रात्रि में चीरक को दीवार के ऊपर खींच कर सीधा रखा जाता है या दो खंभों के आधार पर स्थापित किया जाता है। प्रस्तुत प्रसंग को विशिष्टता प्रदान करने हेतु कथा वाचक की पत्नी वर्णित दृश्य के समक्ष लालटेन को प्रकाश हेतु थामे रहती है।

भारत के संगीत वाद्य

MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA 1

1. Painting from Bhimbetka—M.P.

When the stone age caves of Bhimbetka were discovered in late 1950's ago, there was great excitement. Scholars believe that these caves are 10,000 years old. Each group of inhabitants who lived in these caves left drawings or etchings on the walls which depicted scenes from everyday life, such as hunting, dance and music. When the walls were studied by archaeologists, several layers of paintings were discovered.

The bow-shaped harp seen in this painting is said to be more than 5,000 years old. This is, perhaps the earliest evidence of a stringed instrument in India. It is possible that the instrument was made of bamboo and the strings of animal gut. It seems to be a simpler version of the Chitraveena or seven stringed harp mentioned in the later musical texts.

2. Dance scene, Sculptured Panel, Gwalior, M.P.

The Gupta period in Indian history is known for its excellence in artistic and intellectual achievements. Great poets, philosophers and musicians received patronage from kings, noblemen and the public at large. Dancers received special recognition. There are several sculptures of this period that show dance performances along with the musicians. In this picture of the 5th century C.E., musicians are seen accompanying a dancer. Musicians are shown playing two varieties of stringed instruments, a bow-shaped harp and a finger-board instrument, similar in structure to the modern Sarod. Also seen on the top left, are a pair of vertical drums. The fingerboard stringed instruments are capable of producing several notes on one string thereby maintaining continuity of sound and reproducing grace notes, *gamakas*, glides, etc.

3. Musicians and Dancer—Sanchi Stupa, Sculptured panel

The Sanchi Stupa was built and renovated between 2nd century B.C.E. to 2nd century C.E. Along the stone railings and *toranas* are fine carved panels depicting episodes from the life of Buddha and the Jataka tales. In this sculpture, a Naga is witnessing a dance performance. Accompanying female musicians are playing on a bow shaped harp, a flute and variety of drums.

4. Bow-shaped Veena

The bow-shaped Dhanur Veena or harp that you see in the picture is no longer popular on the concert platform as it is not capable of producing complicated note combinations. However, its structure is interesting, the resonator is made of gourd, it is covered with animal hide and seven strings are passed through it. These are attached to pegs which are inserted in the curved bamboo. There is one string for each note. This is very similar to the instrument found in pre-historic cave paintings and later in sculptures of 1st to 5th century C.E.

5. Jantar

Jantar is a variety of fretted veena. In structure, it is very close to the contemporary Rudra Veena and the Saraswati Veena. All these instruments have two resonators of gourd or wood. The resonator at the lower end of the Jantar is made of specially grown pumpkin. From this projects a neck which connects to the fingerboard—the *danda* has a smaller gourd at the upper end for providing extra resonance. The strings are plucked with fingers.

The Jantar shown in this picture is from Rajasthan. It is a plucked stringed instrument usually played in temple courtyard by singers narrating stories of the Devnarain painted on the Phad. Minstrels singing ballads and traditional songs moving from place to place also use this instrument.

6. Rudra Veena

The Been or the Rudra Veena of the North has two gourds as in the Jantar. The *danda* or fingerboard in the Rudra Veena has a number of frets which are fixed by wax, therefore, they cannot be moved. They have thin edges as in many of the Indian Veenas. The length of the vibrating wire determines the pitch of the *swara*, which is controlled by pressing the wire with the finger. Hence, on one single wire a number of notes are produced. It has four strings which are passed over a wide bridge on the tabli. Three additional strings on one side and another at the opposite side are used for playing the *Jhala* (the fast note combinations). As in other stringed instruments the wires are tuned by tightening the pegs—the *khoontis*. While playing, the instrument is held across the body with the upper pumpkin gourd resting on the left shoulder.

You will notice that, though the Rudra Veena is very similar in structure to the Jantar it is very beautifully decorated with carvings and ivory inlay work. The most sophisticated style of Hindustani music, that is, the Dhrupad and Dhamar is played on this instrument and the rhythmic accompaniment is provided by the horizontal drum—the Pakhawaj.

7. Saraswati Veena

The Veena of South India is made entirely of wood. The variety of wood found in the southern region improves the quality of sound. In Saraswati Veena, the main bowl or resonator and the neck are made out of one piece of wood. The fingerboard is also of wood but it is separately made and attached to the neck. When the whole instrument is carved out of one log of wood it is called the Ekanda Veena. The sound of this veena has a rare resonant quality. Four wires of metal go over the bridge which are tuned to Sa Pa Sa Pa. There are also three more strings called the Sarani. These are used for giving tala strokes. The frets of metal are broad and are fixed to the fingerboard by wax. The main resonator is placed on the ground and the instrument is held lightly across the left arm while playing. Both the Rudra Veena and Saraswati Veena are plucked instruments. The musician uses a plectrum or a mijrab, a small triangular wire on the fingers of the right hand, to strike the strings.

8. Gottuvadyam

A category of stringed instruments are known as the non-fretted veenas. Gottuvadyam is a popular non-fretted concert instrument of the southern region. It has two gourds joined together by a *danda* over which pass four strings and another three strings of metal. These are fixed to seven wooden pegs at the other end of the *danda*. There are twelve sympathetic wires running parallel to the main strings known as the *tarab*. The hollow stem made of wood is 30" long and 4" wide. Three metal *mijrabs* are worn on the right hand fingers for plucking the strings. The left hand holds a cylindrical wooden or glass piece which glides over the strings to produce the required notes for the melody.

In this picture, you see a concert performance of the Gottuvadyam, the rhythmic accompaniment is provided by the Mridangam and the Ghatam.

9. Musician, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The temples of Khajuraho in Madhya Pradesh were built during the 10th, 11th and 12th centuries C.E. The outer walls of these temples are profusely carved with episodes from myths and legends, scenes showing dancers and musicians playing on instruments. These inform us of the type of instruments in use during the period. In a niche, a musician is shown playing a veena very similar to the fingerboard stringed instruments popular today in Northern India.

10. Sarod

The Sarod has a unique structure quite different from other contemporary veenas. The body of the instrument is made out of wood, the top of which is covered partly by thin parchment and metal plating. There are seven main strings of metal which pass over an ivory bridge and are attached to wooden pegs on one side of the *danda*. The fingerboard of the Sarod which is fitted with a thin metal plate has no frets. This facilitates the sliding of the fingers on the wires on the metal fingerboard. It has about fifteen sympathetic strings, below the main strings, known as the *tarab*. It is played with a bone or ivory plectrum held in the right hand, while the left hand moves up and down the wires to produce the required notes for the melody or *raga* to be played.

11. Ragini Gurjari Todi, Kangra School, 18th Century

There are several schools of painting that flourished in the region of Rajasthan, Punjab hills and Himachal Pradesh during the 16th, 17th and 18th centuries. The paintings were made on paper, with soft colours prepared from natural minerals and rocks. The paintings covered a variety of themes and provided illustrations to manuscripts and written texts. This painting shows a lady playing on the veena which is very similar in structure to the Jantar and Rudra Veena of today. Notice the two gourds acting as resonators at both ends of the *danda*, the fingerboard. We can distinctly see that it is a fretted instrument. This painting belongs to the Ragamala series of miniature paintings. Raga Todi is usually visualised by showing a deer approaching the veena player.

12. Sitar

The Sitar is a very popular contemporary stringed instrument of Northern India. It is a fretted veena with a long finger board—*danda* attached to a *toomba* made of gourd. There are five metal strings which pass over a wide bridge and along the fretted *danda*. They are tuned to *Ma Sa Pa Sa* and *Pa* of the lower registers. Below the bridge are a set of sympathetic strings called the *tarab*. The frets in the sitar are moveable and are adjusted to the proper position to suit the notes of the *raga* to be played. The sitar is played with the *mijrab*, a small triangular wire slipped on to the fingers of the right hand for plucking the strings.

13. Lady with Veena, Sculpture, Bhubaneshwar; Odisha

Many sculptures in Odisha temples show scenes from daily life, dancers in typical Odissi poses and musicians playing on a variety of musical instruments. In this picture you see a slightly damaged sculpture from Mukteshwara Temple in Bhubaneshwar, Odisha, showing a musician playing a Veena. In structure, it is very similar to the Jantar and the Rudra Veena. It has two gourds as resonators joined by a fingerboard.

14. Musician, Mughal Painting, 17th Century

The imperial mughal painting, circa 1625 shows musicians singing and playing on a stringed instrument outside a camp. These travellers must be relaxing after setting up camp for the night.

Notice a similarity to the European style of painting from the depiction of the landscape at a distance.

15. Violin

The Violin as we see it today came from the West about 300 years ago. It is both a solo instrument and is also used for accompanying vocal music. It is a non-fretted inverted bowed instrument which has only four wires running across a thin bridge, it is specially designed out of hollow wood. The strings are usually of steel and tuned to *Ma Sa Pa Re* or *Sa Pa Sa Pa*. It is held at an angle and the Indian musician sits on the floor while playing. The bow is thinner and sometimes longer than that of the Sarangi with the hair attached permanently to one end, whereas on the other end, the tension of the hair can be adjusted. In the West the musician stands or sits on a chair while playing the Violin.

16. Violin-Patachitra

Patachitras are painted scrolls used by storytellers to illustrate various episodes from their story. The storytellers move from village to village, the narration accompanied by musical instruments and song. In this Patachitra, a woman is shown playing the violin.

17. Sarangi

The Sarangi is one of the most important non-fretted bowed instrument in northern India. The body of this instrument is scooped out of one piece of wood. Just above the sound box (resonator) the shape narrows to facilitate bowing. The lower part of the instrument is covered with parchment while the upper-most portion has a wide wooden plate which ends in a box-like structure for the pegs—the khoontis. There are three gut strings for playing the *raga* and one string made of brass. The first three are tuned to *Sa Pa Sa* and the fourth to *Ga* or *Ma*, though most of the playing is done only on the first two strings. All four strings pass over a thin bridge and are tuned by tightening the pegs. There are about 18 *tarab* strings. The *tarab* are a set of wires which are placed below the main strings and tuned to the *raga* that is to be played When a note is produced on the main string by plucking or bowing on the string, the *tarab* wire tuned to the same note also vibrates and thus the sound produced is rich and resonant.

18. Dilruba

The Dilruba is a fretted bowed instrument, it is held upright while playing, its body is slightly larger than the Esraj which is a similar instrument popular in Bengal. The resonator is covered with thin parchment and joined to the fingerboard which has moveable frets made out of metal. The four main strings are tuned to *Ma Sa Sa Pa*. The Dilruba also has about 15 *tarab* strings. Like many other stringed instruments of North India, these strings are tuned to the *raga* to be played and add richness to the tone.

19. Kamaicha

The Kamaicha is a bowed lute played by the Manganiars of west Rajasthan. The whole instrument is one piece of wood, the spherical bowl extending into a neck and fingerboard; the resonator is covered with leather and the upper portion with wood. There are four main strings and a number of subsidiary ones passing over a thin bridge

The Kamaicha links the sub-continent to Western Asia and Africa and is considered by some scholars to be the oldest instrument, with the exception of the Ravana Hatta or Ravana Hasta Veena.

20. Banam

The Banam is a variety of the inverted bowed instrument mostly found in Bihar and Odisha. The pear shaped body is carved out of a single piece of wood covered with a skin and is attached to a large upper end which is open. The fingerboard which is narrow ends in a small box-like structure for the pegs. Three cotton or gut strings run across the bridge and are stretched by tightening the pegs. It is widely used for accompanying folk songs

21. Pena

Pena is a small bowed instrument mostly found in Manipur. A small coconut shell covered with animal hide serves as the resonator. A bamboo or a wooden stick is attached to this coconut shell to form the fingerboard, the whole instrument is about 45 cms. in length. The string is usually a bunch of hair which are tied directly to the bamboo and hence there are no pegs. It has a thin bridge, which is rounded in shape. The long bow has a wooden hand and, attached to it are several bells which give a beautiful rhythmic accompaniment to the playing. The Pena accompanies both traditional singing and dance in Manipur and is also played for certain rituals.

22. Ravana Hatta (Ravana Hasta Veena)

Ravana Hatta or Ravana Hasta Veena is a bowed stringed instrument popular in Rajasthan. It provides accompaniment to vocal singing in the traditional story telling form of 'Pabuji Ka Phad'. The stories of the legendary figure 'Pabuji' are painted on cloth scroll. All night the scroll is stretched across a wall or held by two poles. To highlight the episode being narrated, the wife of the story teller holds a lamp near the visual being described.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
1

1. Painting from Bhimbetka—M.P.

When the stone age caves of Bhimbetka were discovered in late 1950's ago, there was great excitement. Scholars believe that these caves are 10,000 years old. Each group of inhabitants who lived in these caves left drawings or etchings on the walls which depicted scenes from everyday life, such as hunting, dance and music. When the walls were studied by archaeologists, several layers of paintings were discovered.

The bow-shaped harp seen in this painting is said to be more than 5,000 years old. This is, perhaps the earliest evidence of a stringed instrument in India. It is possible that the instrument was made of bamboo and the strings of animal gut. It seems to be a simpler version of the Chitraveena or seven stringed harp mentioned in the later musical texts.

2. Dance scene, Sculptured Panel, Gwalior, M.P.

The Gupta period in Indian history is known for its excellence in artistic and intellectual achievements. Great poets, philosophers and musicians received patronage from kings, noblemen and the public at large. Dancers received special recognition. There are several sculptures of this period that show dance performances along with the musicians. In this picture of the 5th century C.E., musicians are seen accompanying a dancer. Musicians are shown playing two varieties of stringed instruments, a bow-shaped harp and a finger-board instrument, similar in structure to the modern Sarod. Also seen on the top left, are a pair of vertical drums. The fingerboard stringed instruments are capable of producing several notes on one string thereby maintaining continuity of sound and reproducing grace notes, *gamakas*, glides, etc.

3. Musicians and Dancer—Sanchi Stupa, Sculptured panel

The Sanchi Stupa was built and renovated between 2nd century B.C.E. to 2nd century C.E. Along the stone railings and *toranas* are fine carved panels depicting episodes from the life of Buddha and the Jataka tales. In this sculpture, a Naga is witnessing a dance performance. Accompanying female musicians are playing on a bow shaped harp, a flute and variety of drums.

4. Bow-shaped Veena

The bow-shaped Dhanur Veena or harp that you see in the picture is no longer popular on the concert platform as it is not capable of producing complicated note combinations. However, its structure is interesting, the resonator is made of gourd, it is covered with animal hide and seven strings are passed through it. These are attached to pegs which are inserted in the curved bamboo. There is one string for each note. This is very similar to the instrument found in pre-historic cave paintings and later in sculptures of 1st to 5th century C.E.

5. Jantar

Jantar is a variety of fretted veena. In structure, it is very close to the contemporary Rudra Veena and the Saraswati Veena. All these instruments have two resonators of gourd or wood. The resonator at the lower end of the Jantar is made of specially grown pumpkin. From this projects a neck which connects to the fingerboard—the *danda* has a smaller gourd at the upper end for providing extra resonance. The strings are plucked with fingers.

The Jantar shown in this picture is from Rajasthan. It is a plucked stringed instrument usually played in temple courtyard by singers narrating stories of the Devnarain painted on the Phad. Minstrels singing ballads and traditional songs moving from place to place also use this instrument.

6. Rudra Veena

The Been or the Rudra Veena of the North has two gourds as in the Jantar. The *danda* or fingerboard in the Rudra Veena has a number of frets which are fixed by wax, therefore, they cannot be moved. They have thin edges as in many of the Indian Veenas. The length of the vibrating wire determines the pitch of the *swara*, which is controlled by pressing the wire with the finger. Hence, on one single wire a number of notes are produced. It has four strings which are passed over a wide bridge on the tabli. Three additional strings on one side and another at the opposite side are used for playing the *Jhala* (the fast note combinations). As in other stringed instruments the wires are tuned by tightening the pegs—the *khoontis*. While playing, the instrument is held across the body with the upper pumpkin gourd resting on the left shoulder.

You will notice that, though the Rudra Veena is very similar in structure to the Jantar it is very beautifully decorated with carvings and ivory inlay work. The most sophisticated style of Hindustani music, that is, the Dhrupad and Dhamar is played on this instrument and the rhythmic accompaniment is provided by the horizontal drum—the Pakhawaj.

7. Saraswati Veena

The Veena of South India is made entirely of wood. The variety of wood found in the southern region improves the quality of sound. In Saraswati Veena, the main bowl or resonator and the neck are made out of one piece of wood. The fingerboard is also of wood but it is separately made and attached to the neck. When the whole instrument is carved out of one log of wood it is called the Ekanda Veena. The sound of this veena has a rare resonant quality. Four wires of metal go over the bridge which are tuned to Sa Pa Sa Pa. There are also three more strings called the Sarani. These are used for giving tala strokes. The frets of metal are broad and are fixed to the fingerboard by wax. The main resonator is placed on the ground and the instrument is held lightly across the left arm while playing. Both the Rudra Veena and Saraswati Veena are plucked instruments. The musician uses a plectrum or a mijrab, a small triangular wire on the fingers of the right hand, to strike the strings.

8. Gottuvadyam

A category of stringed instruments are known as the non-fretted veenas. Gottuvadyam is a popular non-fretted concert instrument of the southern region. It has two gourds joined together by a *danda* over which pass four strings and another three strings of metal. These are fixed to seven wooden pegs at the other end of the *danda*. There are twelve sympathetic wires running parallel to the main strings known as the *tarab*. The hollow stem made of wood is 30" long and 4" wide. Three metal *mijrabs* are worn on the right hand fingers for plucking the strings. The left hand holds a cylindrical wooden or glass piece which glides over the strings to produce the required notes for the melody.

In this picture, you see a concert performance of the Gottuvadyam, the rhythmic accompaniment is provided by the Mridangam and the Ghatam.

9. Musician, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The temples of Khajuraho in Madhya Pradesh were built during the 10th, 11th and 12th centuries C.E. The outer walls of these temples are profusely carved with episodes from myths and legends, scenes showing dancers and musicians playing on instruments. These inform us of the type of instruments in use during the period. In a niche, a musician is shown playing a veena very similar to the fingerboard stringed instruments popular today in Northern India.

10. Sarod

The Sarod has a unique structure quite different from other contemporary veenas. The body of the instrument is made out of wood, the top of which is covered partly by thin parchment and metal plating. There are seven main strings of metal which pass over an ivory bridge and are attached to wooden pegs on one side of the *danda*. The fingerboard of the Sarod which is fitted with a thin metal plate has no frets. This facilitates the sliding of the fingers on the wires on the metal fingerboard. It has about fifteen sympathetic strings, below the main strings, known as the *tarab*. It is played with a bone or ivory plectrum held in the right hand, while the left hand moves up and down the wires to produce the required notes for the melody or *raga* to be played.

11. Ragini Gurjari Todi, Kangra School, 18th Century

There are several schools of painting that flourished in the region of Rajasthan, Punjab hills and Himachal Pradesh during the 16th, 17th and 18th centuries. The paintings were made on paper, with soft colours prepared from natural minerals and rocks. The paintings covered a variety of themes and provided illustrations to manuscripts and written texts. This painting shows a lady playing on the veena which is very similar in structure to the Jantar and Rudra Veena of today. Notice the two gourds acting as resonators at both ends of the *danda*, the fingerboard. We can distinctly see that it is a fretted instrument. This painting belongs to the Ragamala series of miniature paintings. Raga Todi is usually visualised by showing a deer approaching the veena player.

12. Sitar

The Sitar is a very popular contemporary stringed instrument of Northern India. It is a fretted veena with a long finger board—*danda* attached to a *toomba* made of gourd. There are five metal strings which pass over a wide bridge and along the fretted *danda*. They are tuned to *Ma Sa Pa Sa* and *Pa* of the lower registers. Below the bridge are a set of sympathetic strings called the *tarab*. The frets in the sitar are moveable and are adjusted to the proper position to suit the notes of the *raga* to be played. The sitar is played with the *mijrab*, a small triangular wire slipped on to the fingers of the right hand for plucking the strings.

13. Lady with Veena, Sculpture, Bhubaneshwar; Odisha

Many sculptures in Odisha temples show scenes from daily life, dancers in typical Odissi poses and musicians playing on a variety of musical instruments. In this picture you see a slightly damaged sculpture from Mukteshwara Temple in Bhubaneshwar, Odisha, showing a musician playing a Veena. In structure, it is very similar to the Jantar and the Rudra Veena. It has two gourds as resonators joined by a fingerboard.

14. Musician, Mughal Painting, 17th Century

The imperial mughal painting, circa 1625 shows musicians singing and playing on a stringed instrument outside a camp. These travellers must be relaxing after setting up camp for the night.

Notice a similarity to the European style of painting from the depiction of the landscape at a distance.

15. Violin

The Violin as we see it today came from the West about 300 years ago. It is both a solo instrument and is also used for accompanying vocal music. It is a non-fretted inverted bowed instrument which has only four wires running across a thin bridge, it is specially designed out of hollow wood. The strings are usually of steel and tuned to *Ma Sa Pa Re* or *Sa Pa Sa Pa*. It is held at an angle and the Indian musician sits on the floor while playing. The bow is thinner and sometimes longer than that of the Sarangi with the hair attached permanently to one end, whereas on the other end, the tension of the hair can be adjusted. In the West the musician stands or sits on a chair while playing the Violin.

16. Violin-Patachitra

Patachitras are painted scrolls used by storytellers to illustrate various episodes from their story. The storytellers move from village to village, the narration accompanied by musical instruments and song. In this Patachitra, a woman is shown playing the violin.

17. Sarangi

The Sarangi is one of the most important non-fretted bowed instrument in northern India. The body of this instrument is scooped out of one piece of wood. Just above the sound box (resonator) the shape narrows to facilitate bowing. The lower part of the instrument is covered with parchment while the upper-most portion has a wide wooden plate which ends in a box-like structure for the pegs—the khoontis. There are three gut strings for playing the *raga* and one string made of brass. The first three are tuned to *Sa Pa Sa* and the fourth to *Ga* or *Ma*, though most of the playing is done only on the first two strings. All four strings pass over a thin bridge and are tuned by tightening the pegs. There are about 18 *tarab* strings. The *tarab* are a set of wires which are placed below the main strings and tuned to the *raga* that is to be played. When a note is produced on the main string by plucking or bowing on the string, the *tarab* wire tuned to the same note also vibrates and thus the sound produced is rich and resonant.

18. Dilruba

The Dilruba is a fretted bowed instrument, it is held upright while playing, its body is slightly larger than the Esraj which is a similar instrument popular in Bengal. The resonator is covered with thin parchment and joined to the fingerboard which has moveable frets made out of metal. The four main strings are tuned to *Ma Sa Sa Pa*. The Dilruba also has about 15 *tarab* strings. Like many other stringed instruments of North India, these strings are tuned to the *raga* to be played and add richness to the tone.

19. Kamaicha

The Kamaicha is a bowed lute played by the Manganiars of west Rajasthan. The whole instrument is one piece of wood, the spherical bowl extending into a neck and fingerboard; the resonator is covered with leather and the upper portion with wood. There are four main strings and a number of subsidiary ones passing over a thin bridge.

The Kamaicha links the sub-continent to Western Asia and Africa and is considered by some scholars to be the oldest instrument, with the exception of the Ravana Hatta or Ravana Hasta Veena.

20. Banam

The Banam is a variety of the inverted bowed instrument mostly found in Bihar and Odisha. The pear shaped body is carved out of a single piece of wood covered with a skin and is attached to a large upper end which is open. The fingerboard which is narrow ends in a small box-like structure for the pegs. Three cotton or gut strings run across the bridge and are stretched by tightening the pegs. It is widely used for accompanying folk songs.

21. Pena

Pena is a small bowed instrument mostly found in Manipur. A small coconut shell covered with animal hide serves as the resonator. A bamboo or a wooden stick is attached to this coconut shell to form the fingerboard, the whole instrument is about 45 cms. in length. The string is usually a bunch of hair which are tied directly to the bamboo and hence there are no pegs. It has a thin bridge, which is rounded in shape. The long bow has a wooden hand and, attached to it are several bells which give a beautiful rhythmic accompaniment to the playing. The Pena accompanies both traditional singing and dance in Manipur and is also played for certain rituals.

22. Ravana Hatta (Ravana Hasta Veena)

Ravana Hatta or Ravana Hasta Veena is a bowed stringed instrument popular in Rajasthan. It provides accompaniment to vocal singing in the traditional story telling form of 'Pabuji Ka Phad'. The stories of the legendary figure 'Pabuji' are painted on cloth scroll. All night the scroll is stretched across a wall or held by two poles. To highlight the episode being narrated, the wife of the story teller holds a lamp near the visual being described.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
1

1. भीमबेटका, म.प्र. के चित्र

कुछ ही दशकों पूर्व जब भीमबेटका की पाषाण युग की गुफाओं की खोज की गई तो बहुत उत्साह उत्पन्न हुआ था। विद्वानों का मानना है कि यह गुफाएं 10,000 वर्ष पुरानी हैं और जो मानव समूह इन गुफाओं में रहे, उन्होंने दीवारों पर चित्रकला तथा खुदाई द्वारा जो चित्र बना कर छोड़े हैं, वे शिकार, नृत्य और संगीत जैसे प्रतिदिन के जीवन-दृश्यों को प्रस्तुत करते हैं। जब पुरातत्ववेत्ताओं ने इन दीवारों को कुरेदा तो चित्रों की कई परतें सामने आईं।

कहा जाता है कि इस चित्र में दिखाई देने वाली तीर के आकार की बीन 5,000 वर्ष पुरानी है। शायद यह भारत में तार वाद्यों का सर्वाधिक प्राचीन प्रमाण है। ऐसा सम्भव है कि वह वाद्य बांस और पशु की अँतड़ियों से बना हो। यह बाद के समय के संगीत ग्रंथों में प्राप्त वाद्य-चित्र या फिर सात तारों वाली बीन का ही एक रूप लगता है।

1. Painting from Bhimbetka—M.P.

When the stone age caves of Bhimbetka were discovered in late 1950's ago, there was great excitement. Scholars believe that these caves are 10,000 years old. Each group of inhabitants who lived in these caves left drawings or etchings on the walls which depicted scenes from everyday life, such as hunting, dance and music. When the walls were studied by archaeologists, several layers of paintings were discovered.

The bow-shaped harp seen in this painting is said to be more than 5,000 years old. This is, perhaps the earliest evidence of a stringed instrument in India. It is possible that the instrument was made of bamboo and the strings of animal gut. It seems to be a simpler version of the Chitraveena or seven stringed harp mentioned in the later musical texts.

2. नृत्य का दृश्य, शिल्पयुक्त फलक, ग्वालियर, म.प्र.

भारतीय इतिहास का गुप्त काल अपनी कलात्मक तथा बौद्धिक उपलब्धियों में उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। इस काल में महान कवियों, दार्शनिकों और संगीतकारों ने राजाओं, राजसी पुरुषों तथा जन-साधारण से बड़े स्तर पर समर्थन प्राप्त किया। नर्तकों ने विशेष सम्मान प्राप्त किया। यहां संगीतकारों के साथ नृत्य को प्रदर्शित करने वाली इस काल की बहुत सी मूर्तियां हैं। 5वीं शताब्दी ईसवी सन् के इस चित्र में संगीतज्ञ एक नर्तक के साथ संगति करते देखे जा सकते हैं। संगीतकारों को दो प्रकार के तार वाद्य बजाते हुए दिखाया गया है-एक धनुष के आकार की बीन और एक डांड युक्त वाद्य, जो आधुनिक सरोद से मिलता-जुलता है। ऊपर बांयी ओर लम्बवत् ढोलों की एक जोड़ी भी देखी जा सकती है। डांड वाले तार वाद्यों में एक ही तार पर बहुत से स्वर निकाले जा सकते हैं। इससे स्वर अधिक समय तक कायम रहता है और मनोहर स्वर, गमक तथा श्रुतियां उत्पन्न की जा सकती हैं।

2. Dance scene, Sculptured Panel, Gwalior, M.P.

The Gupta period in Indian history is known for its excellence in artistic and intellectual achievements. Great poets, philosophers and musicians received patronage from kings, noblemen and the public at large. Dancers received special recognition. There are several sculptures of this period that show dance performances along with the musicians. In this picture of the 5th century C.E., musicians are seen accompanying a dancer. Musicians are shown playing two varieties of stringed instruments, a bow-shaped harp and a finger-board instrument, similar in structure to the modern Sarod. Also seen on the top left, are a pair of vertical drums. The fingerboard stringed instruments are capable of producing several notes on one string thereby maintaining continuity of sound and reproducing grace notes, *gamakas*, glides, etc.

3. संगीतकार तथा नर्तक-सांची स्तूप, शिल्पयुक्त फलक

सांची स्तूप को दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरे शताब्दी ईसवी सन् के मध्य बनाया गया तथा इसको पुनरुद्धार किया गया। पत्थर के घेरे और तोरणों के साथ-साथ एक महीन नक्काशी का फलक है, जो महात्मा बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं की घटनाओं को वर्णित करता है। इस शिल्प में नागा एक नृत्य के कार्यक्रम को देख रहे हैं। संगत करने वाली महिला संगीतकार एक तीर के आकार की बीन बजा रही है।

3. Musicians and Dancer—Sanchi Stupa, Sculptured panel

The Sanchi Stupa was built and renovated between 2nd century B.C.E. to 2nd century C.E. Along the stone railings and *toranas* are fine carved panels depicting episodes from the life of Buddha and the Jataka tales. In this sculpture, a Naga is witnessing a dance performance. Accompanying female musicians are playing on a bow shaped harp, a flute and variety of drums.

4. धनुष के आकार वाली वीणा

धनुष के आकार वाली धनुरवीणा या बीन, जिसे आप चित्र में देख रहे हैं, प्रचार में नहीं है, इसका कारण यह है कि यह कठिन स्वरों के मेल को प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं है। जबकि इसकी बनावट दिलचस्प है और इसका तुम्बा घीया या कद्दू से बना होता है। इसे विशेष रूप से सुखाया जाता है तथा खोखला किया जाता है। इसके बाद इसे पशु की खाल से ढका जाता है। तुम्बे के ऊपर से होकर सात तारें गुजरती हैं। फिर तारों को खूंटियों से जोड़ दिया जाता है, जो वक्र बांस के डांड में डाल दी जाती हैं। प्रत्येक स्वर के लिए एक तार होती है। इस वाद्य की बनावट प्रागैतिहासिक गुफाओं के चित्रें तथा तत्पश्चात् पहली से पांचवीं शताब्दी ईसवी सन् के शिल्पों में दिखाए गए वाद्य से मिलती-जुलती है।

4. Bow-shaped Veena

The bow-shaped Dhanur Veena or harp that you see in the picture is no longer popular on the concert platform as it is not capable of producing complicated note combinations. However, its structure is interesting, the resonator is made of gourd, it is covered with animal hide and seven strings are passed through it. These are attached to pegs which are inserted in the curved bamboo. There is one string for each note. This is very similar to the instrument found in pre-historic cave paintings and later in sculptures of 1st to 5th century C.E.

5. जन्तर

जन्तर पर्दायुक्त वीणा का ही एक प्रकार है। यह बनावट में समकालीन रुद्र वीणा और सरस्वती वीणा से बहुत ही मिलता-जुलता वाद्य है। इन सभी वाद्यों में लकड़ी अथवा लौकी (कद्दू) से बने दो तुम्बे होते हैं। जन्तर के निचले अंतिम हिस्से का तुम्बा विशेष रूप से उगाये गए कद्दू से बना होता है। इससे एक ग्रीवा बाहर निकलती है, जो डांड से जुड़ती है और उसमें अतिरिक्त गूंज देने के लिए ऊपरी अंतिम सिरे में एक छोटा कद्दू या लॉकी का बना तुम्बा होता है। तारों को उंगलियों से छेड़ कर बजाया जाता है।

इस चित्र में दिखाया गया जन्तर राजस्थान का है। यह उंगली से छेड़ कर बजाया जाने वाला तार वाद्य है, जिसे सामान्यत: मंदिर के अहाते में पेड़ पर चित्रित देवनारायण की कहानियां कहते हुए गायक बजाते हैं या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुए परम्परागत गीत तथा गाथा-गीत वाले पुरोहित भी इस वाद्य का उपयोग करते हैं।

5. Jantar

Jantar is a variety of fretted veena. In structure, it is very close to the contemporary Rudra Veena and the Saraswati Veena. All these instruments have two resonators of gourd or wood. The resonator at the lower end of the Jantar is made of specially grown pumpkin. From this projects a neck which connects to the fingerboard—the *danda* has a smaller gourd at the upper end for providing extra resonance. The strings are plucked with fingers.

The Jantar shown in this picture is from Rajasthan. It is a plucked stringed instrument usually played in temple courtyard by singers narrating stories of the Devnarain painted on the Phad. Minstrels singing ballads and traditional songs moving from place to place also use this instrument.

6. रुद्र वीणा

उत्तर की बीन या रुद्र वीणा में जन्तर की ही भांति दो तुम्बे होते हैं। रुद्र वीणा के डांड पर बहुत-से पर्दे होते हैं, जिन्हें मोम की सहायता से चिपकाया जाता है इसलिए यह हिल नहीं सकते। अन्य बहुत-सी भारतीय वीणाओं की तरह से इनके किनारे पतले होते हैं। कम्पित होने वाली तार की लम्बाई स्वर का स्वर-मान (स्तर) निश्चित करती है, जिसे तार को उंगली से दबा कर नियंत्रित किया जाता है। इस प्रकार एक ही तार पर बहुत-से स्वर उत्पन्न होते हैं। इसमें चार तार होते हैं, जो तबली पर स्थित चौड़े ब्रिज या घुड़च से होकर गुजरते हैं। एक ओर तीन अतिरिक्त तार और दूसरी ओर के अन्य तार झाला (तेज़ी से बजने वाले स्वरों के सम्मिश्रण) को बजाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। अन्य तार वाद्यों की भांति इस वाद्य को खूंटियां कस कर मिलाया जाता है। बजाते हुए इस वाद्य को तिरछा करके पकड़ा जाता है और ऊपर कद्दू का बना तुम्बा बांयें कंधे पर टिका होता है।

आप देखेंगे कि रुद्र वीणा बनावट में जन्तर से बहुत-कुछ मिलती-जुलती होने पर भी नक्काशी तथा हाथी दांत के जड़ाऊ काम से सज्जित हैं। हिन्दुस्तानी संगीत की सर्वाधिक परिष्कृत शैलियों-ध्रुपद और धमार को इस वाद्य पर बजाया जाता है और ताल की संगत पखावज नामक आड़े ढोल से प्रदान की जाती है।

6. Rudra Veena

The Been or the Rudra Veena of the North has two gourds as in the Jantar. The *danda* or fingerboard in the Rudra Veena has a number of frets which are fixed by wax, therefore, they cannot be moved. They have thin edges as in many of the Indian Veenas. The length of the vibrating wire determines the pitch of the *swara*, which is controlled by pressing the wire with the finger. Hence, on one single wire a number of notes are produced. It has four strings which are passed over a wide bridge on the tabli. Three additional strings on one side and another at the opposite side are used for playing the *Jhala* (the fast note combinations). As in other stringed instruments the wires are tuned by tightening the pegs—the *khoontis*. While playing, the instrument is held across the body with the upper pumpkin gourd resting on the left shoulder.

You will notice that, though the Rudra Veena is very similar in structure to the Jantar it is very beautifully decorated with carvings and ivory inlay work. The most sophisticated style of Hindustani music, that is, the Dhrupad and Dhamar is played on this instrument and the rhythmic accompaniment is provided by the horizontal drum—the Pakhawaj.

कलाकार: उस्ताद असद अली खान   Artist: Ustad Asad Ali Khan

7. सरस्वती वीणा

दक्षिण भारत की वीणा पूरी तरह से लकड़ी की बनी होती है क्योंकि दक्षिण प्रदेश में प्राप्त होने वाली लकड़ी ध्वनि की गुणवत्ता में वृद्धि करती है। सरस्वती वीणा में मुख्य तुम्बा और ग्रीवा एक ही लकड़ी के टुकड़े से बने होते हैं। डांड भी लकड़ी का बना होता है पर वह अलग से बना कर ग्रीवा के साथ जोड़ा जाता है। जब सम्पूर्ण वाद्य को एक ही लकड़ी के लट्ठे (टुकड़े) से बनाया जाता है तो इसे एकंद वीणा के नाम से जाना जाता है। ऐसी वीणा में ध्वनि की गुणवत्ता बहुत अनुनादक होती है। ब्रिज या घुड़च से होकर चार धातु के तार जाते हैं, जिन्हें सा प सा प स्वरों में मिलाया जाता है। इसमें तीन और अतिरिक्त तार होते हैं, जिन्हें सारणी कहा जाता है। इन्हें ताल देने के लिए उपयोग में लाया जाता है। धातु के पर्दे चौड़े होते हैं और इन्हें डांड पर मोम से जोड़ा जाता है। मुख्य तुम्बा नीचे रखा जाता है और वाद्य को बजाते हुए हल्के हाथों से तिरछा करके बांयीं बांह के नीचे पकड़ा जाता है। रुद्र वीणा और सरस्वती वीणा उत्कर्षित वाद्य है। संगीतकार तारों को छेड़ने के लिए कोना या गज अथवा दाहिने हाथ की उंगलियों में मिज़राब का प्रयोग करते हैं।

7. Saraswati Veena

The Veena of South India is made entirely of wood. The variety of wood found in the southern region improves the quality of sound. In Saraswati Veena, the main bowl or resonator and the neck are made out of one piece of wood. The fingerboard is also of wood but it is separately made and attached to the neck. When the whole instrument is carved out of one log of wood it is called the Ekanda Veena. The sound of this veena has a rare resonant quality. Four wires of metal go over the bridge which are tuned to *Sa Pa Sa Pa*. There are also three more strings called the *Sarani*. These are used for giving *tala* strokes. The frets of metal are broad and are fixed to the fingerboard by wax. The main resonator is placed on the ground and the instrument is held lightly across the left arm while playing. Both the Rudra Veena and Saraswati Veena are plucked instruments. The musician uses a plectrum or a *mijrab*, a small triangular wire on the fingers of the right hand, to strike the strings.

कलाकार: स्वर्गीय सी.वी. वेंकटाचलम् Artist: Late C.V. Venkatachalam

8. गोट्टूवाद्यम्

तार वाद्यों का एक वर्ग पर्दाविहीन वीणाओं का है। गोट्टूवाद्यम् दक्षिणी प्रदेश का एक पर्दाविहीन प्रचलित वाद्य है। इसमें दो तुम्बे होते हैं, जिन्हें डांड की सहायता से परस्पर जोड़ा जाता है। इसके ऊपर से होकर चार तार और अन्य तीन धातु के तार गुजरते हैं। इन्हें डांड के दूसरे अंतिम सिरे पर सात लकड़ी की खूंटियों से जोड़ा जाता है। मुख्य तारों के समानांतर बाहर गूंज वाली तारें होती हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। लकड़ी का खोखला डांड़ 30 इंच लम्बा और 4 इंच चौड़ा होता है। तारों को छेड़ने के लिए दायें हाथ की उंगलियों में तीन धातु की मिज़राबें पहनी जाती हैं। बायें हाथ में एक बेलनाकार लकड़ी का टुकड़ा या फिर एक कांच का टुकड़ा होता है, जिसे राग के लिए आवश्यक स्वरों को उत्पन्न करने हेतु तारों पर घुमाया जाता है।

इस चित्र में आप गोट्टूवाद्यम् का कार्यक्रम-प्रदर्शन देख सकते हैं। ताल की संगत मृदंग तथा घटम् से की गई है।

8. Gottuvadyam

A category of stringed instruments are known as the non-fretted veenas. Gottuvadyam is a popular non-fretted concert instrument of the southern region. It has two gourds joined together by a *danda* over which pass four strings and another three strings of metal. These are fixed to seven wooden pegs at the other end of the *danda*. There are twelve sympathetic wires running parallel to the main strings known as the *tarab*. The hollow stem made of wood is 30" long and 4" wide. Three metal *mijrabs* are worn on the right hand fingers for plucking the strings. The left hand holds a cylindrical wooden or glass piece which glides over the strings to produce the required notes for the melody.

In this picture, you see a concert performance of the Gottuvadyam, the rhythmic accompaniment is provided by the Mridangam and the Ghatam.

कलाकार: रवि किरण   Artist: Ravi Kiran

9. संगीतकार, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश स्थित खजुराहो के मंदिर 10वीं, 11वीं और 12वीं शताब्दी ईसवी सन् में निर्मित किए गए। इन मंदिरों की बाहरी दीवारों पर पौराणिक कथाओं तथा दंतकथाओं की घटनाएं प्रचुर मात्र में खुदी हुई हैं। इनमें वाद्यों को बजाते हुए नर्तकों और संगीतकारों के दृश्य प्रदर्शित किए गए हैं। यह दृश्य उस काल में प्रयुक्त किए जाने वाले वाद्यों के विविध प्रकारों के बारे में हमें जानकारी देता है। एक आले में, एक संगीतकार को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है, जो वर्तमान समय में उत्तर भारत में प्रचलित डांड युक्त तार वाले वाद्यों से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

9. Musician, Lakshmana Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh

The temples of Khajuraho in Madhya Pradesh were built during the 10th, 11th and 12th centuries C.E. The outer walls of these temples are profusely carved with episodes from myths and legends, scenes showing dancers and musicians playing on instruments. These inform us of the type of instruments in use during the period. In a niche, a musician is shown playing a veena very similar to the fingerboard stringed instruments popular today in Northern India.

10. सरोद

सरोद की एक विशिष्ट बनावट है, जो अन्य समकालीन वीणाओं से काफी हद तक भिन्न है। वाद्य का ढांचा लकड़ी का बना होता है, जिसे थोड़े पतले चमड़े की परत और धातु की परत से ढका जाता है। इसमें धातु के बने सात मुख्य तार होते हैं, जो हाथी दांत के बने ब्रिज या घुड़च से होकर गुजरते हैं और ये तार डांड के एक ओर लकड़ी की खूंटियों से जुड़े होते हैं। सरोद का डांड पतली धातु की प्लेट के साथ लगा होता है और इसमें पर्दे नहीं होते। इससे धातु के डांड पर स्थित तारों पर उंगलियां अच्छी तरह से चल सकती हैं। इसमें मुख्य तारों के नीचे करीब पंद्रह गूंज प्रदान करने वाले तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। इसे दायें हाथ में हाथी दांत की मिज़राब को पकड़ कर बजाया जाता है, जबकि बायाँ हाथ तार पर ऊपर-नीचे घूमता है, ताकि बजाए जाने वाले स्वर-समूह या राग के लिए आवश्यक स्वरों की उत्पत्ति की जा सके।

10. Sarod

The Sarod has a unique structure quite different from other contemporary veenas. The body of the instrument is made out of wood, the top of which is covered partly by thin parchment and metal plating. There are seven main strings of metal which pass over an ivory bridge and are attached to wooden pegs on one side of the *danda*. The fingerboard of the Sarod which is fitted with a thin metal plate has no frets. This facilitates the sliding of the fingers on the wires on the metal fingerboard. It has about fifteen sympathetic strings, below the main strings, known as the *tarab*. It is played with a bone or ivory plectrum held in the right hand, while the left hand moves up and down the wires to produce the required notes for the melody or *raga* to be played.

कलाकार: उस्ताद अमजद अली खां   Artist: Ustad Amjad Ali Khan

11. रागिनी गुर्जरी तोड़ी, कांगड़ा शैली, 18वीं शताब्दी

16वीं, 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान, पंजाब की पहाड़ियों और हिमाचल प्रदेश में चित्रकला की कई शैलियां प्रचलित हुई। चित्र, कागज पर प्राकृतिक खनिजों और चटानों से तैयार किए गए कोमल रंगों से बनाए जाते थे। चित्रों में विविध विषयों को लिया गया है और इन चित्रें ने पांडुलिपियों तथा ग्रंथों आदि के लिए प्रदर्शन-सामग्री प्रदान की है। इस चित्र में एक स्त्री को वीणा बजाते हुए दर्शाया गया है, जो आज के जन्तर और रुद्र वीणा की बनावट से मिलता-जुलता है। डांड के दोनों सिरों पर अनुनादक की तरह से काम करने वाले दो तुम्बे देखिए। हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि यह एक पर्दायुक्त वाद्य है।

यह चित्र लघुचित्रों की रागमाला शृंखला से संबंधित है। राग तोड़ी में आमतौर पर एक हिरण को वीणा वादक के समीप पहुंचते हुए दर्शाया जाता है।

11. Ragini Gurjari Todi, Kangra School, 18th Century

There are several schools of painting that flourished in the region of Rajasthan, Punjab hills and Himachal Pradesh during the 16th, 17th and 18th centuries. The paintings were made on paper, with soft colours prepared from natural minerals and rocks. The paintings covered a variety of themes and provided illustrations to manuscripts and written texts. This painting shows a lady playing on the veena which is very similar in structure to the Jantar and Rudra Veena of today. Notice the two gourds acting as resonators at both ends of the *danda*, the fingerboard. We can distinctly see that it is a fretted instrument. This painting belongs to the Ragamala series of miniature paintings. Raga Todi is usually visualised by showing a deer approaching the veena player.

12. सितार

सितार उत्तर भारत का एक बहुत ही प्रचलित समकालीन तार वाद्य है। यह एक लम्बी डांड के साथ पर्दायुक्त वीणा है। डांड कद्दू (लौकी) से बने तुम्बे से जुड़ा हुआ है। चौड़े ब्रिज (घुड़च) के ऊपर से और पर्दायुक्त डांड के साथ-साथ पांच धातु की तारें होकर गुजरती हैं। इन्हें नीचे के सप्तक (मंद्र सप्तक) के म सा प सा और प में मिलाया जाता है। ब्रिज या घुड़च के नीचे गूंज पैदा करने वाले तारों का एक समूह होता है, जिन्हें तरब कहा जाता है। सितार के पर्दे (सारिका) ऊपर-नीचे सरकाए जा सकते हैं और वे बजाए जाने वाले राग के स्वरों के अनुकूल ठीक स्थान पर स्थापित किए जाते हैं। सितार को मिज़राब की सहायता से बजाया जाता है। यह एक छोटी त्रिकोण आकार की तार होती है, जिसे दाहिने हाथ की उंगली में पहन कर तार को छेड़ा जाता है।

12. Sitar

The Sitar is a very popular contemporary stringed instrument of Northern India. It is a fretted veena with a long finger board—*danda* attached to a *toomba* made of gourd. There are five metal strings which pass over a wide bridge and along the fretted *danda*. They are tuned to *Ma Sa Pa Sa* and *Pa* of the lower registers. Below the bridge are a set of sympathetic strings called the *tarab*. The frets in the sitar are moveable and are adjusted to the proper position to suit the notes of the *raga* to be played. The sitar is played with the *mijrab*, a small triangular wire slipped on to the fingers of the right hand for plucking the strings.

कलाकार: देबू चौधरी Artist: Debu Chaudhuri

13. वीणा लिए हुए स्त्री, मूर्ति शिल्प, भुवनेश्वर, ओड़िशा

ओड़िशा के मंदिरों में प्राप्त बहुत-से मूर्ति शिल्पों में, पारंपरिक ओड़िशी मुद्राओं में नर्तक, दैनिक जनजीवन के दृश्य और विविध संगीतात्मक वाद्यों को बजाते संगीतकारों को प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत चित्र में आप ओड़िशा स्थित भुवनेश्वर के मुक्तेश्वर मंदिर की थोड़ी क्षतिग्रस्त मूर्ति देख सकते हैं, जिसमें एक संगीतकार को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। इस वाद्य की संरचना अथवा बनावट जंतर तथा रुद्र वीणा से बहुत समानता रखती है। इस वीणा के, डांड से जुड़े हुए, अनुनादक के रूप में दो तुंबे हैं।

13. Lady with Veena, Sculpture, Bhubaneshwar; Odisha

Many sculptures in Odisha temples show scenes from daily life, dancers in typical Odissi poses and musicians playing on a variety of musical instruments. In this picture you see a slightly damaged sculpture from Mukteshwara Temple in Bhubaneshwar, Odisha, showing a musician playing a Veena. In structure, it is very similar to the Jantar and the Rudra Veena. It has two gourds as resonators joined by a fingerboard.

14. संगीतकार, मुगल चित्र, 17वीं शताब्दी

लगभग सन् 1625 के आसपास बनी इस शाही चित्रकृति में एक शिविर (तम्बू) के बाहर संगीतकारों को गाते हुए तथा तार युक्त (तत्) वाद्य बजाते हुए निदर्शित किया गया है। यह यात्री अवश्य ही रात में सोने के लिए तंबू लगाने के बाद आराम कर रहे होंगे।

ध्यान से देखिए, चित्र के पार्श्व में दूरवर्ती प्राकृतिक दृश्य के चित्रण के साथ इस चित्रकृति की यूरोपीय चित्र शैली की सभ्यता दिखाई देती है।

14. Musician, Mughal Painting, 17th Century

The imperial mughal painting, circa 1625 shows musicians singing and playing on a stringed instrument outside a camp. These travellers must be relaxing after setting up camp for the night.

Notice a similarity to the European style of painting from the depiction of the landscape at a distance.

15. वायलिन (बेला)

हम आज जिस वायलिन को देखते हैं, वह आज से 300 वर्ष पूर्व पश्चिम से आया है। यह एकल वाद्य भी है तथा इसे कंठ-संगीत (गायन) के साथ संगत करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। यह पर्दाहीन, गजयुक्त वाद्य है, जिसकी चार तारें होती हैं, जो एक संकरे ब्रिज (घुड़च) से होकर गुजरती हैं। यह वाद्य विशेष तौर पर खोखली लकड़ी से बनाया जाता है। इसके तार सामान्यत: स्टील के होते हैं और म सा प रे अथवा सा प सा प स्वरों में मिलाए जाते हैं। इसे एक निश्चित कोण पर रखा जाता है और भारतीय संगीतकार इसे बजाते समय ज़मीन पर बैठते हैं। इसका गज सारंगी की तुलना में पतला और कभी-कभी लंबा होता है तथा गज के एक सिरे पर स्थाई रूप से बाल जुड़े होते हैं, जबकि दूसरे सिरे पर बालों का खिंचाव व्यवस्थित किया जा सकता है। पश्चिम में संगीतकार वायलिन बजाते हुए या तो खड़ा रहता है या फिर कुर्सी पर बैठता है।

15. Violin

The Violin as we see it today came from the West about 300 years ago. It is both a solo instrument and is also used for accompanying vocal music. It is a non-fretted inverted bowed instrument which has only four wires running across a thin bridge, it is specially designed out of hollow wood. The strings are usually of steel and tuned to *Ma Sa Pa Re* or *Sa Pa Sa Pa*. It is held at an angle and the Indian musician sits on the floor while playing. The bow is thinner and sometimes longer than that of the Sarangi with the hair attached permanently to one end, whereas on the other end, the tension of the hair can be adjusted. In the West the musician stands or sits on a chair while playing the Violin.

कलाकार: प्रताप लक्ष्मण पवार   Artist: Pratap Laxman Pawar

16. वायलिन (बेला)-पटचित्र

पटचित्र लंबे कागज पर कथा चित्रित करने की शैली है, जिसे कथा-वाचकों द्वारा कथा के विविध प्रसंगों को प्रदर्शित करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। कथा-वाचक अपनी कथा को सुनाने के लिए एक गांव से दूसरे गांव तक घूमते हैं। कथा वाचन के साथ संगीत-वाद्यों और गीतों का प्रयोग किया जाता है।

इस पटचित्र में एक स्त्री को वॉयलिन (बेला) बजाते हुए दिखाया गया है।

16. Violin-Patachitra

Patachitras are painted scrolls used by storytellers to illustrate various episodes from their story. The storytellers move from village to village, the narration accompanied by musical instruments and song. In this Patachitra, a woman is shown playing the violin.

17. सारंगी

सारंगी उत्तर भारत का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सारिका हीन (पर्दा हीन), गज से बजने वाला वाद्य है। इस वाद्य का ढांचा लकड़ी के एक टुकड़े से बनाया जाता है। अनुनादक (तुम्बे) के ठीक ऊपर इस वाद्य का आकार सिकुड़ जाता है, ताकि गज से बजाने में सुविधा हो सके। इस वाद्य का निचला हिस्सा चर्मपत्र से ढका रहता है, जबकि सबसे ऊपरी हिस्से में एक चौड़ी लकड़ी की पटी (प्लेट) होती है, जो खूंटियों के लिए बने एक बक्से जैसी बनावट में जाकर समाप्त होती है। राग को बजाने के लिए पशु की अँतड़ियों से बने तीन तार और एक पीतल का तार होता है। पहले तीन तारों को सा प सा में मिलाया जाता है और चौथे तार को ग य या म में मिलाया जाता है। हालांकि अधिकतर पहले दो तारों पर ही बजाने का काम किया जाता है। सभी चारों तार एक पतले या संकरे ब्रिज (घुड़च) के ऊपर से होकर गुजरते हैं और उन्हें खूंटियों को कसकर उपयुक्त स्वर में मिलाया जाता है। इसमें लगभग 18 तार होते हैं, जिन्हें तरब कहा जाता है। तरब-तारों का एक समूह होता है, जिन्हें मुख्य तारों के नीचे स्थापित किया जाता है और बजाए जाने वाले राग के स्वरों के अनुसार इन तारों को मिलाया जाता है। तब मुख्य तार पर आघात करके अथवा गज लगा कर स्वर उत्पन्न किया जाता है तब उसी स्वर में मिलाए गए तरब के तार भी कम्पित होते हैं और इस प्रकार से जो ध्वनि होती है, वह गंभीर और गूंज से पूर्ण होती है।

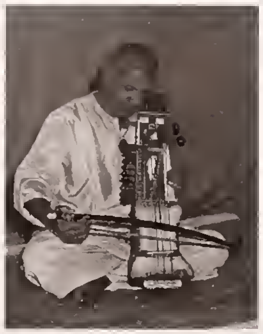

17. Sarangi

The Sarangi is one of the most important non-fretted bowed instrument in northern India. The body of this instrument is scooped out of one piece of wood. Just above the sound box (resonator) the shape narrows to facilitate bowing. The lower part of the instrument is covered with parchment while the upper-most portion has a wide wooden plate which ends in a box-like structure for the pegs—the khoontis. There are three gut strings for playing the *raga* and one string made of brass. The first three are tuned to *Sa Pa Sa* and the fourth to *Ga* or *Ma*, though most of the playing is done only on the first two strings. All four strings pass over a thin bridge and are tuned by tightening the pegs. There are about 18 *tarab* strings. The *tarab* are a set of wires which are placed below the main strings and tuned to the *raga* that is to be played. When a note is produced on the main string by plucking or bowing on the string, the *tarab* wire tuned to the same note also vibrates and thus the sound produced is rich and resonant.

18. दिलरुबा

दिलरुबा एक पर्दायुक्त, गज से बजने वाला वाद्य है। इसे खड़ा करके बजाया जाता है। यह बंगाल में प्रचलित वाद्य-इसराज से मिलता-जुलता वाद्य है। दिलरुबा आकार में इसराज से थोड़ा बड़ा होता है। इसका तुम्बा एक पतले चमड़े की परत से ढका जाता है और इसे डांड के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें धातु से बने ऊपर-नीचे होने वाले पर्दे (सारिका) होते हैं। चार मुख्य तारों को म सा सा प स्वरों में मिलाया जाता है। उत्तर भारत के अन्य कई तार वाद्यों के समान ही दिलरुबा में भी 15 तरब के तार होते हैं। यह तार बजाए जाने वाले राग के स्वरों में मिलाए जाते हैं और यह तार ध्वनि की समृद्धता को बढ़ाते हैं।

18. Dilruba

The Dilruba is a fretted bowed instrument, it is held upright while playing, its body is slightly larger than the Esraj which is a similar instrument popular in Bengal. The resonator is covered with thin parchment and joined to the fingerboard which has moveable frets made out of metal. The four main strings are tuned to *Ma Sa Sa Pa*. The Dilruba also has about 15 *tarab* strings. Like many other stringed instruments of North India, these strings are tuned to the *raga* to be played and add richness to the tone.

कलाकार: वरुण गुप्ता   Artist: Varun Gupta

19. कमैचा

कमैचा पश्चिम राजस्थान के मगनियार समुदाय द्वारा गज की सहायता से बजायी जाने वाली वीणा है। यह संपूर्ण वाद्य लकड़ी के एक ही टुकड़े से बना होता है, गोलाकार लकड़ी का हिस्सा गर्दन तथा डांड का रूप लेता है अनुनादक (तुंबा) चमड़े से मढ़ा होता है और ऊपरी भाग लकड़ी से ढका होता है। इसमें चार मुख्य तार होते हैं और कई सहायक तार होते हैं, जो पतले ब्रिज (घुड़च) से होकर गुजरते हैं।

कमैचा वाद्य उप महाद्वीप को पश्चिम एशिया और अफ्रीका से जोड़ता है और इसे कुछ विद्वान रावन हत्ता अथवा रावण हस्त वीणा के अपवाद स्वरूप प्राचीनतम वाद्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

19. Kamaicha

The Kamaicha is a bowed lute played by the Manganiars of west Rajasthan. The whole instrument is one piece of wood, the spherical bowl extending into a neck and fingerboard; the resonator is covered with leather and the upper portion with wood. There are four main strings and a number of subsidiary ones passing over a thin bridge.

The Kamaicha links the sub-continent to Western Asia and Africa and is considered by some scholars to be the oldest instrument, with the exception of the Ravana Hatta or Ravana Hasta Veena.

20. बनाम

बनाम गज से बजने वाले वाद्य का ही एक प्रकार है। यह वाद्य अधिकतर बिहार और ओड़िशा में पाया जाता है। इसका नाशपाती के आकार का ढांचा लकड़ी के एक टुकड़े पर खुदाई करके बनाया जाता है। फिर इसे पशु की खाल में मढ़ा जाता है और एक बड़े ऊपरी सिरे से जोड़ा जाता है, जो खुला हुआ होता है। डांड, जो कि संकरा होता है, खूंटियों के लिए एक छोटे से बक्से जैसे ढांचे में जाकर समाप्त होता है। ब्रिज या घुड़च के ऊपर से तीन सूत के या चमड़े के तार गुजरते हैं और इन्हें खूंटियों से कसकर खींचा जाता है। इस वाद्य को लोकगीतों की संगत करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

20. Banam

The Banam is a variety of the inverted bowed instrument mostly found in Bihar and Odisha. The pear shaped body is carved out of a single piece of wood covered with a skin and is attached to a large upper end which is open. The fingerboard which is narrow ends in a small box-like structure for the pegs. Three cotton or gut strings run across the bridge and are stretched by tightening the pegs. It is widely used for accompanying folk songs.

21. पेना

पेना एक छोटा गज से बजने वाला वाद्य है। यह वाद्य अधिकतर मणिपुर में पाया जाता है। पशु की खाल से मढ़ा हुआ एक छोटे नारियल का खोल इसके तुम्बे का काम देता है। इस नारियल के खोल से एक बांस अथवा लकड़ी की डंडी जुड़ी रहती है, जो डांड का काम देती है। यह पूरा वाद्य लम्बाई में करीब 45 से.मी. होता है। इसके तार अक्सर बालों का एक गुच्छा होते हैं, जिन्हें सीधे बांस से बांध दिया जाता है और इसलिए इसमें कोई खूंटिया नहीं होती। इसका ब्रिज या घुड़च संकरा होता है, जो गोलाकार होता है। इसका लम्बा गज लकड़ी का बना होता है और इससे बहुत-सी घंटियां जुड़ी रहती हैं, जो बजाते समय सुन्दर लयात्मक संगत प्रदान करती है। पेना मणिपुर में नृत्य तथा परम्परागत गायन दोनों की ही संगति के लिए उपयोग में लाया जाता है और इसे कुछ धार्मिक अनुष्ठानों पर भी बजाया जाता है।

21. Pena

Pena is a small bowed instrument mostly found in Manipur. A small coconut shell covered with animal hide serves as the resonator. A bamboo or a wooden stick is attached to this coconut shell to form the fingerboard, the whole instrument is about 45 cms. in length. The string is usually a bunch of hair which are tied directly to the bamboo and hence there are no pegs. It has a thin bridge, which is rounded in shape. The long bow has a wooden hand and, attached to it are several bells which give a beautiful rhythmic accompaniment to the playing. The Pena accompanies both traditional singing and dance in Manipur and is also played for certain rituals.

22. रावन हत्ता (रावण हस्त वीणा)

रावन हत्ता अथवा रावण हस्त वीणा राजस्थान में प्रचलित गज से बजाया जाने वाला एक तार युक्त (तत्) वाद्य है। इस वाद्य द्वारा परंपरागत कथा-कथन की शैली 'पाबू जी का पड़' के प्रस्तुतीकरण में कंठ संगीत के साथ, संगति प्रदान की जाती है। कल्पित आकृति 'पाबू जी' की कथाओं को वस्त्र चीरक (स्क्रॉल) पर चित्रित किया जाता है। रात्रि में चीरक को दीवार के ऊपर खींच कर सीधा रखा जाता है या दो खंभों के आधार पर स्थापित किया जाता है। प्रस्तुत प्रसंग को विशिष्टता प्रदान करने हेतु कथा वाचक की पत्नी वर्णित दृश्य के समक्ष लालटेन को प्रकाश हेतु थामे रहती है।

22. Ravana Hatta (Ravana Hasta Veena)

Ravana Hatta or Ravana Hasta Veena is a bowed stringed instrument popular in Rajasthan. It provides accompaniment to vocal singing in the traditional story telling form of 'Pabuji Ka Phad'. The stories of the legendary figure 'Pabuji' are painted on cloth scroll. All night the scroll is stretched across a wall or held by two poles. To highlight the episode being narrated, the wife of the story teller holds a lamp near the visual being described.

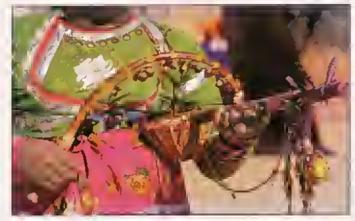

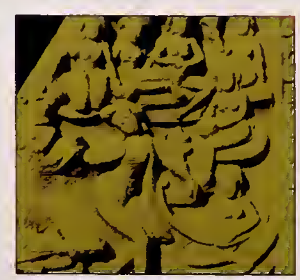

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Director, Centre for Cultural Resources and Training
Published by Director, Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi
Printed at Viba Press Pvt. Ltd., New Delhi - 110 020
2017